प्रथम अध्याय

तृतीय नादयालन तथा मृदुकृतिक में पात्र

================================================================
तैस्कृत्तिक नाट्यशास्त्र तथा मृदुकुटक वे पात्र

भारतीय नाट्य लघुत्तम में नेता - नायक लघुक का तत्त्व माना गया है जो विलयक के बहुधे तत्त्वों में से दूसरा है, उस का नाटक में विशेष महत्त्व है। नेता के अन्तर्गत ही अन्य पात्र भी आते हैं। पात्रों का प्रधान हो नाटक की सक्षमता तथा असक्षमता का नियामक करता है। नाटकीय पात्र तत्त्वलिन समक की अवस्थाओं का दृश्य प्रत्युत्तर करते हैं। नाटककार उन्हीं के माध्यम से ही आघातों जैसे पीड़ा, वातावरण, स्थान तथा संस्कृति आदि का परिचय लाभार्थीयों को देते हैं। लघु और रंगमूर्ति में पात्र नायक-नायिका आदि को होते हैं जो उसे प्राप्त देते हैं तथा गीत प्रदान करते हैं। अतः नाटक में पात्रों का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

भारत ने भारत वैदिक राष्ट्र के विभिन्न अंशों में रहने पाना नामा लघु-रंग, मेघ-पूवा, वीव-लघुव, आधार-त्वमार और अवस्था इत्यादि की दृष्टि से विभिन्न और विशेष तर नारी के लोक जीवन के परशु था। भारत ने पुस्तकों तथा सिस्टमों की तीन प्रकार की प्रकृति विकास की है - उल्लभ, मध्यम तथा अध्यम।

10. तुरांकु माय देशरा, भारत और भारतीय नाट्यशास्त्र, पृ. 186
20. नाथा. 241, नाथा. 403 सुंदर 232
विरोध-दयता, बानकता, नानोलूकों में बुखार, दार्शनिक, के हुए को लात-खंडन के चेतनशील, नाना शास्त्रीयों में सम्प-निक, गाम्मियों, आदरता और स्वर्पत्ति तथा त्याग के मुखों से युक्त उत्तम प्रकृति होती है। लोग व्यक्ति में धर्म, शिक्षा और साधन में स्वूक्ष्यन्तर, पंक्ति तथा स्वछन्द के युक्त होते हैं तथा मध्यम प्रकृति होती है। लक्ष का पाणि, दुःखों, मोटी शून्य, भूकंपीता, पिशाच, पित्त-झिंक, अक्षुण्ण, आत्मत नारियों के प्रति धौलता, आदिप्रकृता, पाप का जने पाता, पर प्रधानता और आधा का भाव होता - इन दोनों तो युक्त होते हैं पर पुस्त की अथम प्रकृति होती है।

कोणत हुआ, वेयुकता के युक्त रिमलभारिक, अनिश्चित, गुरुओं ते औरने में निर्मृत, दर्शायुक्त विद्याशील, सम्पूर्ण त्योत, युक्ति, युक्त, त्योत, अपनी उत्तम प्रकृति की होती है। अतः तथा गुरूका हो और अन्यांनों के युक्त स्वर्य मध्यम प्रकृति की होती है यह मध्यम प्रकृति की नारी उत्तमप्रकृति की नारी के गुरूण में रक्षी का स्वयं होता है पर उनमें दोष अल्प होते हैं। जो पुस्तकों की अथम प्रकृति की गई है वह ही अथम नारियों की भी होती है यह अथमप्रकृति की नारी अथम पुस्तकों की प्रकृति के लोग होती है।

नाटक में राजा, रानी, प्रतिनाथक, पिक्तुर, जित, धार, भूल, कोर, कैदी कृष्ण, धार्मिक, धार, तेल, दीर्घ, भू, पुरी, विजयवाल, तपस्वी आदि नाटक नारियों के बहायक पात्र पाये जाते है।

3. नाथा 24-2-3, नाथ-5 4-4 233
4. नाथा 24-4, नाथ-5 4-5 234
5. नाथा 24-5-7, नाथ-6 4-5 235
6. नाथा 24-9-10
7. नाथा 24-11
8. नाथा 24-12
युधिष्ठिर का प्रथम कोटि में आता है, जिस्व परिचयक की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण लघुत्व रखता है। नासिक यात्रा विधान के अनुसार इसकी कथावस्तु मध्यकाल के जोबक के आधार पर की गई है। इसके लावण के दो बारों के पात्र मिलते हैं जो दूसरी और पोर, आदि, पट पेट और गाँधार भी।

इसी प्रकार यूथा रेती पतिता-अंकली नारी का दृष्टिक तो वेश्या और
गुरुजाओं का भी।

शृङ्खल ने तत्काल लोकत्व में बायद पहली पार करयुग श्रेणी के लोगों को अपने नाटक का पात्र बनाया है। तत्काल का नाटक का उद्देश्य श्रेणी के पात्रों के विशेष रूप से तथा तबसुक विधान के मुख्य में अपनी भास्ति को परिवर्तनों वारा है। परसूतु शृङ्खल ने इस कथा पार्शव का विषय परिपूर्ण बनाया अपने लिए स्त्री नवीन जाना ही आनन्द का रिमा है। उसके पात्र दिन प्रस्तुति पूर्व तकाओं पर और गुरुजाओं में बना फिरते थे, लक्षण में लिखित पात्र है जिनके नाक को जापन के लिए न तो आफ्ता को दोजाना पड़ता है और न जिनके भावों को
लाभ के के लिए भने के दो वेश्या को कब्र करते होते हैं। युधिष्ठिर की इतिहास शास्त्रीय
लेख तौर पर युधिष्ठिर प्रथम है क्योंकि इसमें तुल्य-परमारों, पोर आदि, वेश्या-पात्रों का
आर्की वायुप्रकाश है?

पद्मोख यूथा रेती शास्त्रीय नाम नाम व्यास के अनुसार - तत्काल
में यही एक मात्र परिचय विधान प्रथम नाटक का वा लेखा है। शृङ्खल ने अपनी
कृति में सभी प्रकार के पात्रों की दृष्टि कर तत्कालीन स्त्री का कार्य की संज्ञाय

| 70 | बादेव उपाध्याय, शृङ्खला लोकत्व का इतिहास, पृ. 522 |
पर्व यथार्थ खित्र उपरिक्षा किया है । अतः परित्र विषय की दृष्टि से यह एक सयं नाटककार है ।

पुस्तक पात्र –

सुख्याय –

सुख्याय नाटक का प्रमुख पात्र है । वह कभी कभी विभी पात्र का भी आभियान करता है । नानदी के बाद सुख्याय रंगमय पर उपरिष्ठ होकर नाटक की स्थापना करता है । वह नटों या परिपरिपरिपरिष्ठ ने तथा वातपती करता हूआ नाटक का परियंत देता है ।

उनके कामोकामों के बारे आफ़ियान पत्थर की जोर तीक नहीं है तथा वे हिस्टे प्रमुख पात्र के रंगमय पर देवस्व करने की कुश्ता देते हैं ।

मृत्युक्षेत्र में सुख्याय की स्थापना का अर्थ भी प्रसंगित करता है ।

वह कभी राजा भूक्ष करारा प्रशीत मृत्युक्षेत्र का आभियान करने के विषय में करता है कि इस मृत्युक्षेत्र में उभारने के आभास व्यापरी लेकिन बाद में दोर हुए दास्तान तथा वस्तुपति की सुनक्षता के सी प्रथाय व्यापकता नामक शरीक ज्ञान की प्रश्न करता परिष्ठ की भी है । नटों के लाख आतपती करते हुए उसे पता चलता है कि उसकी पतनी नटों ने परलोक में भी सुख्याय की पतनी भरने के लिए उध्रपती नामक उपवास रखा है ।

सुख्याय उसी प्रकार के निर्देशन रिती आभास को दूर कर देता है तथापि दास्तान और प्रथाय वेद्य दस्तान अक्षर देने पर भी शौच का निर्माण खुला है कि वह दूसरे आभास को निलंबित करने के लिए खता

10. पर्वतार्थ पार्श्वत्र व शाखरत्मार नानूर राम व्यास, तेसू ताण्डल्य की स्थिरता, पृ. 94
11. नानारु 5-162
12. नानारु 20-30-31, तात्र 6-31-32
13. पृ. 1-6-7
14 सूत्वारः - प्रत्याविद्यायः स्मृते। भवेः। अन्य भाषामुखः निम्नवाच्यपि।

- पू· प्रथम श्रेण, पू· 12

15 मू· १०३-५

16 नानाशा २४-२१-२२

17 नानाक ४-७, पू· २३९

18 नानाकर २० पू· २७
तातृत्व नाट्यशास्त्र में नायक के विभेदन में, गुण तथा विशेषताओं का अभाव है। उक्ती तात्त्विक गुणों में उपस्थित हैं: शोभा, विशिष्ट, वास्तविक, आत्मविश्वास, प्रताधिकार, प्राधिकार, गाम्भीर्य, स्वाभाविक आदि। इन गुणों का मिलकर नायक का विश्वास होता है।

वास्तविक गुणों ने नायक के आदर्श तात्त्विक गुण के हैं: शोभा, विशिष्ट, वास्तविक, आत्मविश्वास, प्रताधिकार, प्राधिकार, गाम्भीर्य, साहित्य, उद्योग, तेव्रता तथा जीवन।

नाट्यकला के नायक के धीर होना परमात्मक है, क्योंकि नायक के सभी में से धीर नायक इच्छाजना नहीं होता है। नायक के धीर गुण नाट्यशास्त्रयों के अभाव हैं: धीरोद्धार, धीरता, धीरोद्धार तथा धीर प्रशान्त। इससे मायावती मायावती के धीररूप से पर पार प्रेमिकों का नीति नाट्यशास्त्रीय गुणों में मिलता है: अनुष्ठान, दखल, रंग तथा धुँध।

मृदुकोटक का नायक पासहरत है। वह धीरप्रशान्त नायक की ब्रजश्रेी में आता है। नाट्यशास्त्रीयों के अनुसार धीर-प्रशान्त वह नायक होता है जो त्यागी कृत कल्याण के तात्त्विक नायक के गुणों से गुलाम आद्यय वा शीतापुक्त आदर्श होता है।

19. द.० २.१-२, र.० १.६१-६३, ला.० ३.३०
20. ना.० २२-३३, द.० २.१०, ना.० ४-६ धूँ २४०, ला.० ३.५०
22. द.० २.६, भाग. ४-१२१, गृह. १-३४, पू. १६, रू. १.८१, ला.० ३.३५
23. ना.० २४-१८, गृह. २.४, पू. १.३३, पू. १६, रू. १.७६-७७, ला.० ३.३४
रामचन्द्र गुप्तचन्द्र के अनुसार धीर्मध्यानन्त नायक निराभारी, सुभाषु, विनयशील तथा नीरीति का अक्षमक अर्थ वाला या न्यायपरायण होता है।

पार्शदात के पीछे शिक्षण पर दृष्टिपत्ति अर्जने से पता चलता है कि मानों धीर्मध्यानन्त नायक के लगभग इसको धैर्य आत्मा ही लक्षित जिसे गर है। पार्शदात उत्तरायिनी का एक धार्मिक युक्त अपने व्यापारी पूर्वजों के विषय तपस्वति प्राप्त करता है तलेज अपनी अतिथियुक्त उदारता से दानस्वदनका के कारण अपनी तात्त्वक सम्पत्ति निर्धारित करता है। वह देता है तथा अक्षमक वे दोषिक हो गया है। वह यशोराज पार्शदात को दृष्टिकोणमा अपना अर्पित करता है कि जहाँ पार्शदात तोरी की धारणा के पूर्व करने के कारण धन्वीन हो गया है, उसे सम्पत्ति की दृष्टि का भी अभाव नहीं रहा। वह तो मनुष्यों की प्रायः मिलावट गम्भीर के तर्क में अवजुनत तालाब के समान लूब गया है।

पार्शदात के उदार, दयालु, शरणार्थ रक्षक, भूम के प्रति भक्ति तथा उपवासका का प्रतिपालक, पारिश्रमिक स्थानांतरण, का स्रोत तथा धार्मिकता से सन्तप्रति व्यवस्था के तर्क में उदार समान आता है। पार्शदात वरिष्ठ आर्थिक विनयका से वे तलेज धम्म कहते हैं। अनुसूचि अवाकवासका से आर्थिक उदारता से प्राप्त होते हैं। जब कोई प्राकारक किसी करता है तो उसे धम्म सामान्य दुर्भागा होता है वह उसे कोई न कोई यथा पुरुषकार लिये अवस्था देता है। क्षेरुरु मूर्ति हाथी से सीढ़ी की संख्या करने पर पार्शदात के उत्तरायिनी दृष्टिकोण में प्राप्त करता है। वह अपने घर से घर को भी निराश नहीं बनाना चाहता लेकिन

24. नाथ 1.7 धूम 7
25. मुनि 1.46
26. क्रमपृष्ठ: आर्यें, सेवाकृत्तदासाध्यायमण्... प्रायः: गोमोपरितिश्च।
   - मुनि कीतीय अनु, पृ.102
पिपीला के कहने पर कि पौर त्वर्त्तात्र धुरा जा ते गया है वह इतना कम गृह तथा प्रज्ञ मानता है वह लोक के घर अधिक भूराह होकर गया । पौष मंथ में चेतो से वह अपोवार लूटि है रथि त्वर्त्तात्र पसंदे नों भी गया है तो वह पुराना वस्त्र अपनी अंगौली चेतो को देना चाहता है । पासंदता की उदारता के कोटी सुगन्ध के पसंदे नों प्रेम करती है ।

पासंदता प्रज्ञों तथा पक्षियों सर्व कुलमित लोगों के प्रति ब्यवहृत है । रेपेल का लेनाा अष्ट्र के राजा पर आया हुआ वह पिपीला को रोकने के निर्देश ते लमा एक देता है । उठार तारा पसंदे नों देता करने का आरोप करने पर चिन्तामणिता के करता है वह वह पूल लेने के लिये कुछ लोग को भी नहीं चिन्ता तथा शुद्ध तारा है तो वह एक प्रयास की दया करते भोजन है ।

पासंदता शरणागत का रखता है । गोपालतुल अर्ध रागा दाता के कारागार ते कभी नूतन है वह पासंदता के पति पलहौल अभाग्य मनाता है । पासंदता उक्ता परिष्क श्रवण का शरणागत का रखता करने हेतु प्राप्त को पावणी लगा देता है ।

पासंदता इसके प्राप्त है । वह अपराधी के प्रति भी बोध नहीं करता है । उठार के तारा मरणान्तिके ऊर के दस्तखों मिलने पर उसे मूर्ख करता है । उठार के तारा

---

27. पासंदता: - यदती कृपायो गा:। - मु: कुलीय यश: पू: 132
28. पासंदता: - भूए, न कापिण्ड प्रज्ञीपहियान दिवसिकुछः। -अंजुलियकुठी। - मु: पौष मंथ पू: 224
29. पासंदता: -सामुक्षिक्षिमुङ्ख अं सुपतर्न प्रबोधितिकुठी। -कुलीय यश: पू: 112
30. मु: 9-28
31. मु: 7-6
32. पासंदता: -सामुक्षिक्षिमुङ्ख अंसती। - मु: पौष मंथ पू: 60
अपने अंग लगार हुए पिथारियोग ते यासदत्त हुआ नहीं होता और न ही
किया होता है । उसकी यह उदारता उस समय तराक्षण पर पहुंच गयी है
वह यह शरणायक स्थान के अभ्यास के दक्षता अवश्य देखा था ते यह है क्योंकि अपराधी युग
को शरण में जाने पर बच्चों के अंतराल उपकार से बाहर हुआ कर देता था।

यासदत्त को अपनी प्रियता और धीर्य की उण्णकन्ता का पूरा ध्यान
है । वस्तुतः एक आरूढ़ अपने घर से घोड़े देने पर यह दूरियाँ हो जाता है।
तेलेजा तो अपने पर रहनात्मा करता है कि यासदत्त का प्रतिनिधि में
कही जोग उसे अपराधी समझौते क्योंकि निर्भरता वंश का पर होती है।
पिल्लूकृत हारा प्रेमित करने पर भी असह्य नहीं बोलता बीत के धीर्य कुले करने की
अंतराल प्रेम दूरियाँ लागता नाही है।

यथा प्राता दूरिया वस्तुतः इसे प्रेम करता है तथापि उसे दूरीत्व
अभिलक्षण है। यह अपने पत्नी दूरिया से भी अतिरिक्त प्रेम करता है तथा उसकी
परिवारी का सम्बन्ध खत्म करता है। वह अभिलक्षण ने वस्तुतः जो यदोहेस दर्शन का
अभिलक्षण उसे अपने पुत्र रोहेसं को अन्दर ले जाने के लिए करता है तथा अपने उत्तरीया
उसे स्थायी दे जाने पर उसकी रोहेसं के अंतिम क्षण अभिलक्षण अवज्जा होना अनुमान
है । अन्यतः एक अभिलक्षण दे देने पर भी उसे उन्नप्पाया को पहले में प्रविष्ट नहीं अभिलक्षण होता।

33. पृ. 1055
34. पृ. 3-24
35. पृ. 3-26
36. पासदत्तः:- अप्याक्षराखाते मन दूरिया कम वातता । पृ. 48
37. पृ. 3-7
38. पासदत्तः तदैव । अभ्यासरोय प्रविष्ट: । - पृ. पृ. 232
उसे अपनी प्राकृतिक स्थिति पर नर्म है।

वह आचार्य है। रोचक के लंबीत की ताब के और पुराणार्थ धर्म का विचारण करते हुए सर्वस्त्र ब्रज है। अपने घर में घूर्ण शरीरक के हारा लगाया गया सृष्टि को देखकर उसकी क्षतिक्ष प्रकट करता है। यह तत्त्व देखने योग्य है कि अंतः अर्थ के भाग से इतने निराकार गई हैं कि अन्य भाग में रच्या तथा बीच के स्थान में पाया है। ऐसी यह सर्वत्र अतुस्तिक के सजन्य से अपने हुए महत्त्व प्रभाव के परदीर्घ हुए हुए के भारत सिखा है।

पास्ताति धार्मिक प्रश्नूति का व्याख्यात है। वह सब्दावधाननीत नियम आयों का अनुसरण करता है। पिलिक के देवताओं में पुजा के अधिकार करने पर उसे स्वाभाविक है। अनुभव। तत्त्वों का यह देवने नियम है। तर, कह, राजा वह भीत करों के द्वारा पूजित। देवता शास्त्रीय प्रथा मुख्य पर अभिनव प्रसन्न होते हैं। उन्होंने तैन चित्तर करने की आश्चर्यचा नहीं है।

पास्ताति का प्रस्तुतना का प्रति असीम श्रेय है। इसकी इसके प्रथम उबि में मिलती है, प्रस्तुतना का मिलने से वह प्रसन्न होकर कहता है कि भाषा अवरुद्ध प्रतिदेश आये थीं ब्रज करता है और आगे राते निरन्तर निर्देश प्राप्त होते व्याख्यात हैं। लेकिन इत्यादि की विश्लेषण और अन्य होगी है कि उनके प्रस्तुतना की हत्या करने का
मिथ्याविषय उस पर बनाया गया है क्योंकि वसन्तसेना ने रोहत उसके बीवर जीवन आँख भी प्रयोग नहीं है। 42 यह उसके अतिशय प्रेम का निदान है। वसन्तसेना उसके उत्कृष्ट गुणों के आरण ही उसके प्रेम करती है। 43 पासरदता का संयमी श्रीवल्लभ त्वमाय वसन्तसेना के लिए सब आर्थिक या तो वसन्तसेना की योजना पूर्वक ल्या लक्ष्यी भी उसे लिए उन्नी हो शायद अधिक महत्त्व प्राप्त थी लेकिन नातक में यही तुच्छ मिलते है कि वसन्तसेना पासरदता में अनुकूल है यह नहीं कि पासरदता वसन्तसेना में अनुकूल है। 44 पासरदता यह पुस्तक रहा है जो व्यक्तियों की रत्नों गीतका को अन्याय अपनी ओर चिंता रहा है। इसीलिए आयार्म में प्राकृतिक मात्र श्रेय वसन्तसेना को मिला है न कि पासरदता को।

पृथकसादृश्य में वोरमत भी पात्र पासरदता की उदारता शरणान्तरसहभाग, दयालुता आदि गुणों की प्रावता करते हैं केवल बसार को बोझ सूक्ष्म वाले में यह चित्र के शब्दों में दोन बोगों के लिए गुप्तगी कहतो है यह अपनी, गर्भवती की क्रोट्य हरत्तर गुणों से युक्त है। 45 पासरदता का परित्याग अपने सम्पूर्ण उपन्यास के उत्कृष्टता से युक्त होकर जीवन के तीसरों के वीर बाबर अमेरने प्राकृतिक मृत्यु है। पासरदता यह दर्शक उसके जीवन के उद्देश्य छाया के साथ अपने हृदय की भावनाओं के उत्तर छाया में व्यस्त रहता है। पासरदता की कूलता में ही अन्य पात्रों के धारण की भूमिकाओं एवं अवतारों का पोषण

42. पासरदता - न ह वसन्तसेनाविपरीतकल जीवितेन बुद्धि० ।
- मूः नवम अंक, पृ. 376
43. वसन्तसेना - गुण: धननुशारात्म अरणमृ । - मूः ग्रन्थ संक, पृ. 34
44. स्मार्क त्वारी, महावीर शृंग, पृ. 279
45. अर्थ, पृ. 279
46. मूः 1.48
मिलता है । प्रक्रिया के अन्त में उसे परम्परा कल्पित नहीं पाएँगे की अनुभव श्रृंखला प्राप्त होती है ।

शुद्ध ने पास्तरत के लय में भारत के आदर्श नायक का प्रति धीर्षा है ।
भारतीय प्रवर्तक के पूर्व लक्ष्य का निष्कर्ष है वे आर्य पास्तरत के लय में प्राप्त होता है, प्यारा है, प्रेम तथा अविरल के जीवन उदारता है ।

पास्तरत पीड़क, बोलीय, उदार, द्याल, द्रुत परासत, क्लासिय और धर्म को मानने वाला नायक है। वे शून्यारी नायक की प्रवर्तक के द्वीप के द्वारा ही का धारणा क्योंकि वह प्रेरणित पतनी धुरा के होते हुए भी गोपाल कल्पितना ते भी प्रेरण करता है वे कनान वह भी भुक्कवूं की पद्मो प्राप्त कर लेता है । इस प्राप्त एवं प्राप्त नायक के तारे भूमि उज्ज्वल विकल्प है ।

नायिका -

रस्ता होता है । नायिका धारा की प्रवर्तक है जिसमें जीवन की परिस्थितियाँ मध्य रत के लिए रहती है । इस जीवन रत के पाने के लिए द्वारा नायक प्राप्त तक प्रेरण करते है और प्रेरणा अपनी नायिका के पार उल्लंघन का स्पष्ट जोड़ता है । 49 शून्यारी धारा नायिका में नायिका की भूमिका अत्यन्त महत्त्व-
पूर्ण होती है। नाटक की वास्तविक संस्था तो वास्तव में नायिका पात्र के निम्नांग में ही धुम रहती है। भरतमुनि के अनुसार यह तैयार होना ही प्रभावित सूक्ष्म पात्रता है, रचयिता कुष का मूल रूप तथा अनेक स्वागतों वाली होती है।

नायक की तरह नायिका भी अनेक प्रकार की होती है। भरतमुनि ने नायिका भेद के लिए जो आधार स्वीकार रखते हैं वे इतने प्रकार हैं-

प्रकृति भेद-

रचयिताओं के प्रकृति पर आधारित तीन भेद होते हैं - उल्लम, भवन तथा अन्य।

कामदेश की अवस्था-

कामदेश की अवस्था के आधार पर नायिकों के आतंक भेद होते हैं - वास्तविक, पिरवोक्षणित, स्वयंवर्तित, अक्षातित, विप्रवत, प्रृथिविभूत तथा अनेकार्थिक।

लाभार्थक प्रकृति-

लाभार्थक प्रकृति के आधार पर नायिकाओं एक प्रकार की है - दित्य।

50. नायिका 22-99
51. नायिका 24-1, नायिका 4-3, नून 232, रानुम 1.151
52. नायिका 22-211-212, 5-8, 2-23, पूर 1.141-142 पूर 19, रानुम 1.121-123, लानुम 3-72-73
नूपपल्ली, ब्ल्युटी तथा गोष्टिका।

शीत पर आधारित -

द्वितीय नूपपल्ली आदि चार नामाखानों की प्रकृति भिन्न-भिन्न होती है।
इसलिए कृष्ण गांधी के भी लोग, जनता, धीरा, निश्चित ये पार नहीं है।

आधारित पर आधारित -

आधार तक परिवर्तन तथा अपवर्तन पर आधारित तीन फेर हैं - भाष्या,
आध्यात्मिक तथा भाष्याम्यान्तर।

अंग रचना तथा अंत:प्रवृत्ति पर आधारित -

देवश्रीतमिति, आशुरी, गन्धर्वसल्लव, गन्धर्वसल्लव आदि आईस फेर है।
भरत की मान्यता है कि नारी प्रकृति पक्षमत्र नहीं है, उस पर अन्य प्राप्तियों के
रूप-रंग और स्वभाव आदि का प्रभाव पड़ता है। ये फेर उसी पर आधारित है।

भरत के परक्रम नामाखानों' ने भी नामाखा फेर पर विचार किया है।
रामचन्द्र गुहापन्दु को होड़ फेर तब आपाताएं' की मतलबकथी विचार प्रणाली

53. नामा: 24.23, नाम: 4.19 कृ 255, नाम: 20.27
54. नामा: 24.24
55. नामा: 22.152
56. नामा: 22.100-101
लागायत ल्यू से सान हो दे । 57. मरत और इन परवती आपायामें की आयार भूमित ओर पर विचार करने से वह लग्न माध्यम पढ़ा है वि गुलिमा: उनके प्रेरणाहीत तो मरत हो देते ।

58. मरत से परवती आपायामें ने नायिका के खुश ल्यू से तीन फैल रहे हैं - त्योहार, परवर्ती तथा सायरुर स्त्री । नायिका में भी नायक की तरह त्योहार, कुली आदि धुम पारे जाते हैं । वयस्क में रस्क्यों में बीत तारिप्रक गुन या अर्थकार होते हैं । नायिका में अधिक, अर्थक, और स्वामार्गिक या अर्थकारों की तीन श्रेणियाँ पायी जाती हैं । भाव, हार्दिक और लेख ये तीन अधिक अर्थकार हैं ।

59. रोम, भाव, वामिक, दोपत, माध्यम, धेर्म, प्रागुर्म्य, और आदर्श ये तात्क अर्थकार भी हैं । तीला, विलास, विपर्वतर, विम्ब, विनिविव्य, वीदा, आदित्य, आदि, विवाह, विवाह, और रितम् ये दस स्वामार्गिक अर्थकार हैं । अर्थकार के अनुसार स्वामार्गिक अर्थकारों की श्रेणी अग्र है । वे मयाधुवान के आदित्यत्व गद, तपन, गोत्म, विवेक, आदि, दोस्त, पापा और घेते को भी स्वामार्गिक अर्थकारों में रखे हैं ।

60. गृहाड्ड याग में बुझती ध्यान तथा गोष्ट स्वाम्मार्गी दो नायिकारों है लेकिन प्रायाल्प से गोष्ट स्वाम्मार्गी का परिचाल हो प्रचारित किया गया है । वि:

57. सुमेन्द्रनाथ दौरान, मरत और भारतीय नायिका, पृ. 202
58. दौरान, पृ. 203
59. भाद्र-पृ. 4-135, रे-सु. 1-95, ला-द. 3-56
60. नायिका 22-4, दौरान 2-30
61. नायिका 22-5, दौरान 2-30
62. नायिका 22-7, दौरान 2-30, ला-द. 3-81
63. नायिका 22-26, दौरान 2-31, ला-द. 3-90
64. नायिका 22-12-13, दौरान 2-32-33
65. ला-द. 3-91-92
भरतपुर्ण के आनुवार नारियों की तिरिक्षा आधारण प्रकृति के आधार पर
गौणित बाध्यता होती है लेकिन बाध्यमयता धृतता और दक्षता से फिर होती है।
धृतता और दक्षता की प्रकृति के निमित्त बाध्यमयता भी यथिगत दक्षत्वगता हो
होती है परंतु उसका आधारण निराधार पद्यगत होता है वह केवल नारी होती
है। सबकी सामान्य स्त्री दक्ष्यता होती है। वह गौणित पुस्तों से देख माय तथा
गौणितों में अनुपस्थता नहीं होती है, उसम प्रक्रम तो ध्वनि से ही होता है। ध्वनि
पुस्त के अनुपाध्याय के हारा प्रज्ञा देता है, उसके ध्वनिमय दौरे पर पिंड
सामग्री की हँसण रहते हैं। पोर, पूर्ण, नरकत, ध्वनि, अर्थ तथा प्रकृति
पुस्त इनके प्रायः केवल होते हैं।

यह गौणित नी कड़ी-कड़ी क्रम के आपूर्तर हुयात तथा अनुराग से बुलं दोह होती
है तथा प्रकृति आदि ल्यों में गौणित अनुपस्थता ही दृष्टिनिवेश होती है।
साहित्यविद्यार्थी के आनुवार दक्षता के नाम के अन्त में दर्शय तिम देता होता
है। भरतपुर्ण के आनुवार दक्षता आ अन्तमुख में प्रेषण विकत है।

66. ना-शा 24-26, 5-5-2021, ना-द 4-19 19 255, सा-शा 1-111
67. ना-द 4-19 255
68. ना-शा 22-153
69. 5-5-2-22, ना-द 3-68-70
70. 5-5-2-23, ना-द 4-20 255, ना-द 3-71
71. ना-द 5-141
72. ना-शा 22-154
कस्तूरिकार, पात्साह्य से मधुर, शुभमति, खाामूल, पिंडूरी,
अपने प्रेम पर चर्चा अवश्य न देने वाली, मुझों की पारंपरी, तथ्य देखिया है।
क्योंकि यह प्रेमी पूर्व मधुर तथा पदल द्वारा पीछा दिये जाते हैं अपरिहार्य सौंदर्य से अभिव्यक्ति देती है तथा उसे अथवा भाषण अपने के लिए बनाने के लिए बनाने के बाहर अपने अथवा दूसरे के हाथ अपना अथवा दूसरे के हाथ दिया हुआ। पूर्वों के वात भिन्न देती है।
अपनी श्रीमान नाथी पदोन्नत को भी पात्साह्य से पुलम करती हैई कहते हैं कि यह तो अपना यह पालने पर तथ्य से सेवकों भोग के पिता ही स्वतंत्र कर देगे।
पासदत के अपने पर यह दरोर की रक्षा करने में आवश्यक होने पर यह ताकतों को लाभार्थी भी बनाने के वह पासदत के उपाय से देती है कि वह का लाभार्थी के पीछे उपलब्ध नहीं है।
यद्यपि कस्तूरिका के हृदय में केवल भाव होता
यदि कस्तूरिका के हृदय में केवल भाव होता
तो वह रत्नाकरी ध्यान के लिए पासदत के उपाय से न हो उसे
पासदत की पतनी हुआ है। पात्साह्य में पहले के हाथों रंगभावती और अपने आप
को उन दोनों की मुझों से आकर पुलम हुई दाती कहती।

73. कस्तूरिका - चौंट, तल गृह। 
74. मदोनिका - समारा तथा भक्ति। यह पूर्व अंक, पृ. 94
75. कस्तूरिका - अच्छा चारा, यूकों नेत्रभयों।
76. कस्तूरिका - चौंट, यूकों नेत्रभयों।
वेदार्थ से कस्तनेना का यह अन्त शिलायत होता है। वांछि कस्तनेना का लेख ध्योपार्थक होता जो वह राधायत की प्रेमती अनंत राधायत श्रीमानेना थी। तेरह वह जो किसी कर्ता के चार वह अन्त शिलायत नहीं है। वह अपनी माता के अधिक ने भी अविभाज्य कर देती है। वह ता हारा दुख्य के अनुपस्थित में देखने वाले भोज ने उस से उदारा बादाम के यह था। भोज ने अपने बनना भ्रष्ट करना है।

उसे राधायत का ग्राम में फलु या वस्त्रान्तर्थ्यों के प्राय है। कस्तनेना से राधायत का उत्सर्जक ग्राम का उसे प्रत्येक मिलन जेवा जानन्दि मिलता है। कस्तनेना उस गर्ता है कि वह बेवाया होने के लागर राधायत के अनुत्तर पुर ने प्रेम की अधिकारिणी नहीं है। लेकिन पृथ्वी श्री में वह राधायत के दाहा प्रेमान्तर्थियों में घर के उदमर प्रविद्ध गरा ही गई है। इसे नाथज्ञानीय रियामों का उल्लोक मुक्त है।

पुष्करिणीपत्र श्री का मुख्यालय करने पर पता चलता है कि नाथज्ञानीय कस्तनेना का धार्मिक उद्देशित राधायत के मिलन गात्र नहीं है। कस्तनेना में बेवाया जीवन के प्रारंभ करने का विश्वास था। और प्राचीन जाने का अन्य मोह था। यिसे ग्राम करने हेतु उसने अन्तिल न्याय, अु दुर्दिन में अश्वास्तितम तथा पुम्पकरणक उत्तम मन इत्यादि जारी कर। वह भोज ने दाहा गारी हुई भी शेतना ग्रामकर

82. कस्तनेना - यदि या जीवनशी मित्रता सदेव न पुनर्ज्ञानाः जापोकालाः
- मू. पुरुष आंक, पृ. 144
83. कस्तनेना - आर्य धार्मिक तथा नाथज्ञानीय ग्रामकरणक ग्रामकर
- मू. विद्यार्थ आंक, पृ. 144
84. कस्तनेना - या भागिनी धर्म के वाह्योत्तम या जापोकालाः
- मू. पुरुष आंक, पृ. 56
85. धार्मिक - रूपिताः अन्तिल न्यायाज्ञानाः
- मू. पुरुष आंक, पृ. 232
पासदत्त को अवगाह के लिए बहादुर्लाल पर पुकार जाती है तथा प्रेम के आवेग में उसके हृदय पर नज़र जाती है। 86 क्षेत्र फरेशा आर्यक की ओर से दी गई झुक-झुक को पद वाला प्राप्त कर अपने आय के धन्व समझता है।

क्ला के में जीवन भोग की लाता है लेकिन वह वर्षीय पत्र की खेती से अनुगामित है, क्षारिता है। देखा तीनों पुष्ठ में मयादता का भी मान करती है, मुख्य लक्ष्य की यही क्षेत्रीय धर्मिया है। 88 नाटककार ने नायका क्ला के में एक लाखे नायिका की क्षेत्रीय धर्मिया को पूर्ण होते हुए दिखाया है। क्ला की बेदना के में, वह अनुगामित क्षेत्रीय धर्मिया की उपस्थिति में भी है। उस युग में यह अपने मानव के विशेष आदरणीय त्वरण था। वसुदेव: उनका आदरणीय बेदना के में धर्मिया अनुगामित में है, इसलिए अन्त में उसे यह बेदना प्राप्त होने पर सब आनंदित होते हैं।

यानी क्ला के में धर्मिया की उपस्थिति में वह एक आदरणीय और बेदना हिन्दू नायिका के में प्रेम तथा आदर का प्रतीक थी। उसमें न तो नायिका की शक्तित्वा बुलाओ नायिका योगिक कार्य था तथा नहीं धारित बुलाओ त्वरण के परिपूर्ण युग में, लेकिन वह उद्देश्य की प्रतीक धर्मिया वन नायिका योग में क्षेत्र धर्मिया को गाना है क्या है, लेकिन तक्त तारिफ में दूसरी ओर भी नायिका नहीं घड़ा पाया।

86• क्ला के में आय के में हिन्दू धर्मिया तरीके में मूँक्षाम अंक
87• शायरिक: - आय क्ला के में, परिपूर्ण राना भरती क्षेत्रीय धर्मिया नायिका है।
88• रमणीय रिमारा, महानचिह्न गुलाब, पृ. 286
89• इतिहास, सत्य सत्यत्व की प्रवृत्तियाँ, पृ. 211
90• रत्नाकरियों दोस्तिय, वोषेन इन्द्र तक्त ध्रुवार, पृ. 59
प्रितनायक शक्ति -

प्रितनायक नायक की योजनाओं का प्रतिरोधी होता है। उल्लोढ़ नायक के तुल्य उत्तराधिकार, प्रताप और अभिमान आदि के वाद होते हैं। नायकों के अनुसार प्रितनायक होते हैं, कृपालु, धीरजक, धार्मिक, धार्मिक, धार्मिक और धार्मिक होते हैं।

प्रितनायक में शक्ति प्रितनायक है। भरतपुर तथा रामचंद्र-मुक्ति के अनुसार नायक में शक्ति और पिता तथा भूत्य आदि से शक्ति के दोहिन्यों पात्र अभूम होते हैं। निकाल के अनुसार गद्यसन्धी, मूल्य, अभिमानी, नितिकोटित, सम्पत्तिशाली, राजा की अधिकारिता तथा भाषा, राजा का तत्ता बहर कब्जलता है।

प्रितनायक में वर्षा शक्ति मूलता प्रांजला, पाप, सूक्ता तथा अक्षरता। आदि दूर्शिर्मों के परिपूर्ण हैं। वह किसी रूपक का पूर्व, राजा पालक की अधिकारिता स्वतंत्रता का भाषा राजकाल है तथा तैलाकाल भी। तब तक में वह स्थायित्वों की उसका अभियोग स्वयंगर न अवरोध नियंत्रण देने की ध्यान की देता है तथा अपना परिचय देता है जिसका विषय पालक के सत्यता तथा उसकी अनुसन्धान के पूर्त रूप है।

91. दूर्शिर्मों 2.9, नारायण 4.13 खुं 250, तालाब 3.13।
92. नारायण 24, नारायण 4.14 खुं 251।
93. दूर्शिर्मों 3.44।
94. शृंग 7.6।
वह अभ्यंत मूर्ध है। उल्लोक क्षम आत्म तथा मुक्ति ते मेरे पड़े हैं, जिन्हों
कि कविता विश्व उपास कर तथा अन्य प्रताप है -- शाह के द्वारा पृथ्वी की जाती
हुई वसन्तमना से भा रही है जैसे राम ते दीर्घ है दौड़े । वह उत्तर वैसे ही
अपराक्ष का लेख जैसे हमारने विवाहाभुज की बल्लित मुहा का अख्तरण किया
है। वह बुद्ध निर्देश तथा पाप है। घट, और घट को वापस बटार
वसन्तमना का भा घोट देता है। घट के निंद्व अनु लो तौ तुष्य मुहूरों
रिपु देना पात्ता है वैश्विन उसके न मानने पर उस पर ही वसन्त सेता की
हत्या करने वा आरोप लगा देता है तथा राजा के तामने के सबाई देने के लिए
किता है। वह पापपूर्ण योजना नामे में लिपुश है। वह घट को जान्या कर
प्राप्त है तथा न्यायः व्याख्या में जान्या न्यायाधीश के सामने पास्तत्त पर
कथ के लिए वसन्तमना की हत्या करने वा आरोप लगा देता है। वैश्विन
के मध्य में घट उसके पाप का उदाहरण किता है तो उस पर घोटे करने वा
आरोप लगा देता है तथा वाणिज्य को दूर तिथित पास्तत्त को मारने के लिए
किता है।

शाह का त्वमाष नीति है, वह बुद्धाशीत तथा मेरे पड़े हैं। उल्लोक क्षम आत्म
प्रतिक्षा करते रहते हैं। उल्लोक वेयोगी घट और घट उसके शीर्ष तथा भयभीत रहते हैं
कि वह का क्या करेगा तथा क्या करेगा? घट की पहले मानी ने इन्हें जा
अग्र है कि, वेयोगी देश बाद दो उसका अन्याय करने लग पड़ता है।

95 • मृ. 1.25
96 • शाहर: -- विद्रोह पूजप्रकश्नक्षियोगोधाने......पुष्कराय देशि।
- मृ. अन्तरंग बंक, पृ. 324
97 • शाहर: -- मदय क्षमप्रकश्नक्षियोग:नात्तरायन अंतिमत।
- मृ. नवम बंक, पृ. 358
98 • शाहर: -- अयाम मुनिवेदः नारायण। - मृ. नवम बंक, पृ. 406
99 • शाहर: -- अयाम तिथि: तथ्य वनयममयोस धरोहरित।
- मृ. अन्तरंग बंक, पृ. 292
प्रथम अंक में वस्तुतेना को लिए विना नहीं बांधे का दुरामृत करता है।

वह उत्तपक तथा आयर भी है। द्वितीय अंक में व्ययस्थल पर वस्तुतेना के आने पर वहा तथा नाम आता है तथा पूर्व के भय से पासदरत की व्यवहार में आकर रक्षा की पाषण करता है। जिया वस्तुतेना की हट्या का आपूर्वर वास्तवत कर अम मृत्युदंड दिल्लिवता है तथा जिया व्ययस्थल पर जले अथवा अन्य आदेशों के बाद तथा कृत्रिम यात्रा है उसी के आगे ग्रामरक्षा है और शरणार्थ अग्र कर कृषि हो जाता है। यहाँ पर उसकी त्वचाया शुद्धता के त्वान पर आयरता हो दूर दृष्टनोद्ध होती है।

क्ष का आयर वशगर का तारा घोरत दुर्भीं के पूर्ण है। वह तत्त:-

लम्प, पूर्ण और दूर्लं है उस साथ ही मानव तथा बाना गीता रहने है जो वह मंत्रण रूप में निधन ही द्वारक का जान तो अलकित न होगी। प्रतिनिधित्व के रूप में नग्न निधन व्याख्या है।

शगर की अवतारणा प्रथम तथा आन्तरिक लघु नाटक में हुई है।

इसे उल्लक और आलोचनाओं का ध्यान अहकृत होता क्वांतापित है। वह रहस्य की रेखा का माहे है और इस पद की बृहत प्रतिक्षा का रूप ही उसके आरम्भ के आयर तथा अववाघ का एक बौद्धिक ज्ञान जानना अवश्य हुआ है। नाटक में न तो उसके वर्ण का लेकर है न उसके देख का।

100• शगर:- आखोंतया वस्तुतेनां न गोमथ्यामपे। मु-प्रथम अंक पृ-52
101• शगर:- बहुतरक पासदरत, शरणागाढो शिशादपूर्णो नीरिण्यामपे।

- मु-दक्ष अंक, पृ-430
102• शाल्यांच दिशेण, मु-वहुकाटक शासत्रव तारातिक यथा रामनुमक अध्ययन, पृ-51
103• वादेव उपायाय, समुद्र तारातिक का श्रद्धल्य, पृ-518
पिदृशक -

रूपारी नायक के सहायकों में पिदृशक और नायक में उन्हें तपस्या, सामर्थ्य तथा स्मिरण स्थान होता है। अपने प्रबन्धों के दृष्टिकोण में धार्मिक उत्साह बनना उसका सामर्थ्य जरूर होता है। नायकाण्डों के अनुसार पिदृशक तथा उनका उत्पादक होता है। अपने प्रशिक्षणों, प्रशिक्षण वनों तथा स्मिरणांक आदि और अपने ज्ञानों के साथ पिदृशक बनाया। पिदृशक का नाम स्त्री पूजा या वस्तुतापित श्रद्धालू के नाम पर भावात्मक होता है। भावनात्मक तथा रामचन्द्रमण - 

दुख बनने ने पिदृशक के चार में बायार है - दिंगिकों प्रत्यक्ष प्राकृतिक, राजनी का नौकर तथा फिर। वह आदर्श, भूमिकात्मक होता है तथा तत्वावधि करता हुआ अपने प्रत्येक प्रत्यक्ष भूमिका को मूलता नहीं है। वह नायक का अन्तर्गत मित्र, नायक के प्रशिक्षणकार में प्रशिक्षण सहयोग, परामर्शक क्षेत्र तथा उसके गौरवीय रूपों का मूल दौखर होता है किसी का करने और अपने मुख्तारपूर्व ज्ञानों से नायक को घोर प्रशिक्षण में भी धारण देता है।

मूर्तित्व प्रकृति का पिदृशक मैत्र दै। वह आदर्श है लेकिन लघुत्वात्मक नहीं है। शक्ति उसे कैश के प्रकाश किसान की धारण करता है। वह पासवात और व्यवस्थाना के खेल का एक दूसरे को प्रशिक्षण अर्थे है। धारण की दो व्याख्याओं के स्मारक निर्मल गृहों जो दीर्घ के बर्तन के फुले

104. नाशा: 35-25, 25-18, नाही 4-14 तुल 251, शा-4-128, 
    प्र.2-1.40, पू-1.9, र-8.1.92, ता-5.3.42
105. ता-4-3-42
106. नाशा: 24-19-20, नाना 4-15 तुल 252
107. हृदेन्द्र नायक शालनी, दो भाग़ चौंक प्रकृति अफ़सी सेन्द्रcube धामा, पू-227
108. शक्ति: विपुलगुंड्रुस्त्रा और अनुभववीर्मात्र सुन्दर बुद्ध।

-पृ-पृथ्व 33, पू-52
विद्वत भोजियाँ तथा पेटु के रूप में भी चित्रित दिखा गया है।

विद्वत्तेना के मत में अनेक प्रागर के धार्म विद्वत्तेणों तथा विद्वत्तेणों की सभ्यता उसे अधिक सक्रिय बना रखी है। सातोक्ते भागिन्त-शालक्षित के आदर का रहा है - कथन वात्ये ना रहे हैं, पूरा पकाये जा रहे हैं अन हर को देखकर पत में लोपत नहीं कर सकते। कि उसे प्रियस्य धर्मक्षेत्र से स्पष्ट भोजन अथवा है क्या उसे कोई पेट थोपने के लिए पानी देगा।

विद्वत्तेना की स्थूलताय पिल्ली उल्लास वाली गाता जो केवल उसे एक ग्रामीण उनके लिए होती है कि उसे भी देता है। फूल धर्म तथा व्यवस्थापन भोजन पर पेट खाता रहे।

पिढ़िये में पिढ़िये तोते-सुन्दर वालयों के उच्चारण अन उच्चारण अनुसार जितने ही और भाषा की याद आ जाती है।

प्रथम अंक में कुम्भीकवे के प्राणों के उत्तर पत और प्राप्त होता है, उसके अनुसार श्रीभग्न में भाव विद्वत्तेना होते हैं तथा सम्प्रदायमानी आर्यों की रचना रच्चा अतिरिक्त वात्र उसके अनुसार रहता है - तेनाभावता।

उलटे तत्त्वों से वह शरीर से उत्तर है पद भारवर्त हें परिचत अनुसार करने का अर्थ।
यह पेरों का बदलना बता है, इत्यादि कम भी हो मूर्ति भरे लगे तो कम उत्तम मूल्य जार्य सामग्रियों को हटाना है, इत्यादि यह कम शरीर को उलटा करता है तथा कभी पेरों को बदलता है।

विद्वुवः ने अपने हो जायेंगे ते पासस्तत को परेशानी में याता है - वह नीचे में कुड़ाकर चोर शरीरक को आमुख़ा भोरो कराने में सहायक हुआ है।

न्यायालय में शरार से बंड़ कर आमुख़ा भूमिय पर गिरा दिया है जिससे पासस्तत के प्राण लीड़ में पड़ गए हैं।

विद्वुवः पासस्तत को गोष्ठा प्रस्ता के हट जाने का परामर्श देता है।

यदौँ गोष्ठा प्रस्ता भी दिखना याता है।

सत्य और गोष्ठा भी हुईं विश्व के तथा गोष्ठा बदल से अन्तर प्रविष्ट हुई केस के स्वाग फिल दुख से निकला आती है।

इत्यादि यह वनस्तता के भी भूमिय की दृष्टि से देखता है।

सत्य प्रास्तत का तथ्य मित्र है। वी देखता है कि पासस्तत के स्वाग का है कि तब समय का मित्र मेल्य आता है।

शरार द्वारा पासस्तत पर पनस्तता की हत्या अने का मिथ्या अख्यायोग लगाये जाने पर यह न्यायालय में ही उससे बड़े लगता है तथा पासस्तत के प्राणे की योश्वा दृष्ट ते हसा जीपा नहीं रहता पासता है।

---------------------------

114. मू. पृष्ठ अंक, पृ. 200-202
115. विद्वुव:— भी व्यक्ति, शांतित्वति---ह्युबय भाषण न भुव्यारतः।
          — मू. पृष्ठ अंक पृ. 124
116. विद्वुव: प्रतीप ताज्याति---विद्वुवक्ष आदेशादमानान्ति पालित ।
          — मू. पृष्ठ अंक, पृ. 372
117. विद्वुव:— नितर्जतामत्तरार्जादयदये---दुःखन दूरावतरिति ।
          — मू. पृष्ठ अंक पृ. 196
118. पासस्तत:— अग तत्साधीते मश्य: धार्षप:। मू. पृष्ठ अंक, पृ. 16
119. विद्वुव:— भी व्यक्ति, अहे ते दिश्यत्वयो भूलता तथ्याविरोटात्मन्त्रांगात्मयात्मन्त्रिं
          — मू. पृष्ठ अंक, पृ. 380
वस्तूवाना को बास्तवता के यहाँ आने पर पुकार है जिस आप दृढ़ वैज्ञानिक यहाँ रखा लिए आई है। इस पर वेश तथा लीला अवस्थाओं का ध्यान है तथा वस्तूवाना उसे नियुक्त करता है। व्यावहारिक उसके प्रश्न में व्याख्या खिला हुआ था।

युप्तिकोटक में परिष्ठ मेधया केवल प्रादेश अपनी उदरशताता को श्रद्धा़त
करने वाला जरूरी - वेदू नहीं है जब वह केवल जान का यथास्थ स्थापित है, ग्रामस्थ आगे एक सम्पूर्ण प्राग्य हैं नियुक्तिता सा लाभ हेतु वाला तत्व अवरुद्ध है। यह अवरुद्ध शुद्ध ने उसके तथ्य अवस्थाओं में समर्थनात्मक ते मित्र का रहने के अर्थ ही उसे मेधया की सेवा का हो।

पीढ़ी और अनुपाय -

नायक में नायक के नई साथी व लक्षायक उपयोग करते हैं। वे शुद्धार्थ लाभ से प्रभृति नायक को संशोधन देते हैं। इनमें से प्रधान भाग जनायक होता है, जो ही पीढ़ी तथा अनुपाय भी का बाल है। नायक के बहुत शास्त्रीय, प्रतिभाग जन्मरूप में नायक के सामान्य गुणों के कुछ नया होता है। यह प्रधान नायक का अनुपाय तथा शक्ति होता है, वह पूरा क्षात्रीय भी भी होता है। रामचंद्र-दुधुरपंच के अनुसार भी भी नायक इतिहास वर्तमान में पताका और प्रकाश नायक

------------

120. वस्तूवाना, नन्दु नियुक्त कार्य जन। - मू. पर्वतम झंक, पृ.222
121. अद्वैत उपाध्याय, दीपक शारदेश का शिक्षक, पृ.517
122. दृस्. 288, नाद. 4.13 कुंज 249, भा.प्र. 4.122, प्रे. 1040, पृ.19,
    र.पहुं. 1.90-91, ल.न.द. 3.39
123. अर्थ पताका प्रकाश भरो स्पर्ने नायको इतिहास: कान। नाद. चूस दिवेक,
    पृ.375.
शैरिलक मृत्यु घटना का प्रकाश का अवलोकन है। उल्लेख दर्शाते है कि 
अस्थायी या नया व्यापार होने पर मात्र अस्थायीता नहीं जानने के साथ नहीं है। उसमें दाहिनी होने के अन्त में पत्र शीर्षकता की नज़र रखने में सार्थक है। वह दात ने ज्ञान पत्र होने पर कर्ता की अधिकता की नज़र कर वर्ती हुई है। वह दात ने ज्ञान पत्र होने पर कर्ता की अधिकता की नज़र कर वर्ती हुई है। वह मात्र ने ज्ञान पत्र होने पर कर्ता की अधिकता की नज़र कर वर्ती हुई है। वह मात्र ने ज्ञान पत्र होने पर कर्ता की अधिकता की नज़र कर वर्ती हुई है।

124 से इस बात का खेल है कि मदलोक के विशेष उसे अनुसार का पूर्वाभास में दस्तावेज दिया है तथा अनुसार अपनी भी भिन्न दिया है। वह निर्मलता का प्रभाव भी क्षेत्रिय है। उसे के कारण क्षेत्र वेश्य का निर्माण करता है।

126 शैरिलक के ये अनुसार अपने निर्माण करते हैं। पीर अपने 
कार्य में लगा हुआ काल की अवधि का लेखा है भी ही उसे किसी 
की दस्तावेज स्थापना कर देता है भी ही उसे किसी 
की दस्तावेज की खोज करती है आश्चर्य ही है। वह दात 
के लोक से नारी, अभिषेक या इत्यादि की परिपरिता का शीलांग नहीं अक्षर है।

127 मदलोक के यह पूरा पर १० १० १० १० १० १० है उसके निर्माण के कारण को करते हुए वह किसी 
की दस्तावेज नहीं की तो वह करते हुए और तोष हुए पर दास्तार नहीं अने का 
उत्तर देता है।
शास्त्रिक सहायको पुस्तको के कुल में पेड़ा हुआ था उसने वदनिका के प्रेम नेवारीसुख दोरक पीयर ल्ये अनुच्छेद लेख लिखा। 128 बहु निदान तथा कैसे कहते? की तीन बातो निम्नान्त तथा निन्दा अर्थ ध्न के विरुद्ध दृष्टि है, रोहि के कुलुको जीवापित पदार्थ देते हैं लेकिन तथ्य स्विमापत नहीं कहते हैं ज्यादातर मुख्यत्वपुस्तक व्यापक के पुस्तक की भाबिन बोड़ देने वाले वापस । शास्त्रिक के ये बचन उसके पारंपरिक गोरघ को ध्न बचाने में क्षमता लिखा है।

राज्य पदार्थ के नायक के ल्ये शास्त्रिक का अद्यतन तात्क्षणिक द्वारा। 129 अपने एकनाल उपमी अपनी नवमूल मदनिका को वह रेप्लिका के यह क्षेत्रफल अपने समीक्षणों विशेष विद्वानों तथा कवियों को अपने निजी आर्यक के मुक्त किया जा भी उत्तेजित अर्थ मैं। 130 उसके अनुदात प्रिय और उनके लोगों को प्रिय है लेकिन प्रिय पर लेख की जाने से ही की फिरतकरार का देना चाहिए। 131 उसके प्रियता धन्य है प्रकरण के अतिर के अन्त में वह आर्यक को विश्वास पर आशाएँ माता चुका है। क्षमतानों तथा पारंपरिक को बीतते देखकर उसे अनुगमन कुलान होता है। । राज्य आर्यक की तभी पक्षों शास्त्रिक की ओर ते ही जाती है। वह पारंपरिक के लाभने सत्य का तथ्य अप्रवाहित है या शास्त्र का शरण में जाता है तथा अपना पारंपरिक देता है। । राजा आर्यक की ओर से पारंपरिक को जुड़ता वां राज्य समीपता करता है। 133 क्षमताना को भी राजा की ओर सेवक पद का

---------------------------
128 पु. 49
129 वही 4.14
130 वही 4.26
131 वही 4.25
132 वही 10.50
133 शास्त्रिक:- प्रतिष्ठानोंका तचो-पारंपरिक राज्यमानिस्तार ।

- पु. दक्षिण, पृ.145
गौरव प्रदान करता है ।

इस प्रकार शरीरिक नायक वास्तवतः के आभिव्यक्ति तथा नायिका वस्तुतः के इस्तेमाल कार्य को सम्पूर्ण करने में लक्ष्यक रूप से हुआ है। यद्यपि आराम में वह हमारे लायक एक पोर के लपर में जाता है लेकिन उसने अपने दिन्या कार्यों के दरा पोरकार का प्रभावण कर दिया है। उसके प्रयास ते ही आर्यक आरामार के कथन-पुर्तम होता है तथा आर्यक के विहानावस्थ में होने के ही लगे कार्य रिक्ष होते हैं। उसके केवल पिच्च में शरीरिक ही था। जिन्हें पालडानायक का अयुक्त देन से अभिव्यक्ति हुई है।

आर्यक -

आर्यक को भी अनुयायक बता नहीं करता है, वह भी नायक वास्तवता का सत्यक रित भांत होता है। एक सिद्ध की भावव्यवस्था है। यद्यपि गोपाल का पुत्र आर्यक राजा का वांग, उसके पथरत हुए राजा पालक ने उसे आरामार में कदर रित कर दिया है। शरीरिक की लक्ष्यता से वह कथन-पुर्तम हो कर जाता है। वास्तवता की गाढ़ी में जाता हुआ प्रमुख रखा चंदन से अभिव्यक्ति होता है। गाढ़ी के निरुक्त हेतु पोरक के नीते देन पर उसे पूर्व कथन का श्रद्ध करता है।

134. शरीरिक:- आर्यक वस्तुतः, पर्युत्को राजा भवानी चौधरी चौधरी देशानुरुपणाति।
-यूद्धम अंक, पृ० 436
135. शरीरिक:- अल्यार्थको गोपालदासको राजा घरेलू कथनमार्ग बह:।
-यूद्धम अंक, पृ० 164
136. आर्यक:- तत्त्वार्थक चंदनसुमुखीक्षारतदीन कथनात्मका प्रयोगमें सिस्मसिस।
-यूद्धम अंक, पृ० 244
137. चंदनसिस:- अयुक्त वर्णांकालेय। यूद्धम अंक, पृ० 256
आर्यक कुल है। वह मुच्छःकित्कम में वेषत जनो और सप्तम अंक में ही दृष्टिदायक होता है। दितिय, तृतीय अंक में उसके राजा अन्ने की तिथि की शक्तिप्रवाही की तुष्टि नैपथ्य से मिलती है तथा द्वाख अनंक में उत्तर राजा बनना श्वरिलक के कथनों से ही जाना होता है। चन्दनक की तिथि के आदेश से अपने राजा अन्ने पर याद रखने का आदेश देता है। पास्तवत को भी वह वेशा ही आदेश देता है। द्वाख अंक में नैपथ्य से तुष्टि मिलती है वि-आर्यक ने पातक को गार कर रविशाल पृथ्वी को लो। रविश्वास में तथा अभिशेक के बाद श्वरिलक को आर्य-चांसलत की युक्तिमें जादेश दिया है। श्वरिलक ही उसकी ओर से चांसलत को ज्ञात कर राज्य देने और बन्नलोण को क्यूँ पद की पदवी प्रदाता करने की योजना अर्जता है। आर्यक के प्रयोगम चांसलत के क्षमाकृत वेष का दास्तव दूर हो जाता है। चन्दनक पृथ्वी अर एष्टनाक का आदेश है।

ये आर्यक की कुछता के अर्थे उद्दार्शन है किसी इतरारारत ते मुक्ति स्वर राजा अन्ने में तदारक को ले।

राजा अन्ने की भ्वतिक की रिप्यति वा पदवी को अस्तल में समर्थ था। मुच्छःकित्कम के द्वाख अंक में राज्य आर्यक के आदेशों की पूर्वीत श्वरिलक द्वारा गई योजनाओं से होती है। बन्नलोण को एक आर्यवर्ष नारी क्यूँ का पद प्रदान अर्ना तथा संस्कारक के वेष-दास स्वारक को दास्तव दे मुक्ति करना इत्यादि उद्दार्शन हैं।

138. आर्यक: स्वास्तिक पिलायत। -सु-सत्तम अंक, पृ-272
139. पृ-10-46
140. धरित, पृ-47
141. श्वरिलक: प्रतिप्रतिमार्कक तथा……हायत्त राज्यविशेषकथम। -मु-द्वाख अंक, पृ-425
142. श्वरिलक: आर्यक बन्नलोण, पौरुषोत्तरे……अनुगृहायत। -मु-द्वाख अंक, पृ-436
143. चांसलत: युक्ति, अदालत अवस्थ। मु-द्वाख अंक, पृ-438
144. चांसलत: - चन्दनक पृथ्वीमानवालों अवस्थ। मु-द्वाख अंक, पृ-438
145. रत्नायति दीर्घकता, वोमेन इन संस्कृत डायाग्राम, पृ-57
संवादक मुद्राकौटक प्रकरण का अनुसार के तथा प्रकरण नायक की श्रेणी में आता है यथाप्राप्त यह प्रकरण में कहता का ही दृष्टिकोण होता है लेकिन उसके प्रश्नों से रक्षित नायिका वस्तुतः का नायक धार्मिक नैतिक स्तर पर लगा है। वह पाटलिपुत्र ने एक तूफान पूजा उपजयान्नी को कंधे की खुली से आया था। पहले पर धार्मिक के संवादक (शरीर द्वारा) की पूर्ति से अधूरी विवाह प्राप्त की हो नाश्ता के दौरान हो जाने पर युद्धकों में लैबन हो आता है। पूर्वकी ने दाहा सा वह वस्तुतः के दाहा अभिन्न अभाव आता है तथा अभिन्न अभाव अभाव बोधिशत्व बन आता है। । वह धीरज शक्ति है तथा लोगों में ब्राह्मण का तीखा करने के लिए उपदेश देता है, संसार की अन्यत्रता से ही वह धार्मिक शब्दों का उपयोग करता है।

वह कृत्ति है, वस्तुतः के दाहा उपकृत हृदय वह उसके प्रति प्रति करने में लायक न होने से तर्क्स की भी तूफान समझता है। भार देश दाहा करने दृढ़ वस्तुतः के पालन के लिए उलझे होने के लिए करता है, यही पर उसकी दृष्टिव्यक्ति दृष्टि का पता पलटा है। वस्तुतः के तात्विक ज्ञान उसे यान का अन्त बोध नहीं रहा है।

-----------------------------
146. संवादक:- आर्य, अन्यनतात् नास्करापाय, नास्करायण ज्ञान-नास्करायण।
- पृ. विकास अंक, पृ. 98
147. पृ. 8.2
148. संवादक: घरी:- अन्यनतात् लघुसंप्रतिष्ठान न बोधिसत्व।
-पृ. 8.2.2 अंक, पृ. 328
149. घरी:- उत्तमतित्तत् अभिन्नात् अपरीक्षितवां राजस्वात्वकः लीलावते।
-पृ. 8.2.2 अंक, पृ. 330
150. पृ. 8.47
वसन्तसूत्र की ग्राममत्र कर उसने उपमार का प्रतिलक्षण अर दिया है। वह क्षयवृत्तिपर वसन्तसूत्र के नाथ पात्र के पासकला की ग्राममत्र करने में वह सहायक बना हैं। इस प्रकार उसने पासकला का भी प्रत्यूतिपाट कर दिया है। लंकार की नापरत्र को देखते हुए उसकी प्रवचन में ब्रह्म दोमुख हो गई हैं तथा उसे पृथ्वी के समन्वय बौद्ध मूर्तियों का कूपचत बना दिया गया है।

इस प्रकार संवाद का वृत्तान्त व्यापे योड़ा हो हेपरम्प हलने अपने दूषयों से घटनाक्रम के नया मोड़ देख पात्र की रूपकता को अव्वल नाभ रखा है तथा यह नायक नापरत्र के संबंध लहारक पात्र लिए दुहा है।

पुस्तकांत में अन्य पात्र -

सत्कू नात्रों में सुधार, नायक-नापरत्र, विदुषक तथा अनुपात्रों के प्रतिकाल अन्य पात्र पात्र बारे हैं। वे भी अपने ध्रुपाकापों से नायक नापरत्र के प्रभाव पर तहाःक बनते हैं। उन्में जैसे कुछ पात्र तो नायक-नापरत्र के तहाःक पात्र होते हैं तथा कुछ उनके चित्ररूप या प्रतिलक्षण के सहायक होते हैं। कुछ ऐसे पात्र भी होते हैं जिनके केवल अज्ञाता दी मिलता है। वे राजमार्ग पर नहीं अग्नि हैं। ऐसे नात्रों में वे नायक के तहाःक बनते हैं। इन पात्रों की नात्र के चित्रावस में महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। भरतमूर्ति के नायकास्त्र में विशिष्ट नात्रों की धर्मार्थ समर्थन होता है। अभिवृत्ती भूमिका नात्र के लिए आवश्यक होती है, वे किसी भी वर्ण या वाणिज्य के हो सकते हैं, अस्त्र व आदर्शवादी होते हैं।

151. पासकला - तद्वेषैः तत्त्वमंशः। तत्त्वैः प्रवचना करिवहारस्य कुलपतिः सम्यक्षम्। - गृः दया इंड, पृश्च 438
152. नापरत्र 24.14
पुस्तक पात्र -

नायक के सूचार रत में स्थायित्व, वातावरण तथा हंसी मनाने में, पुर दोष पक्ष के मानों की दूर, अग्नि जगहि और लघुवात्र लोग घाट घेत तथा विद्युक्त आदि धाढ़ा होते हैं।

मृण्युकटिका के अन्य पुस्तक पात्रों में घाट, माधुर, अधुर, घेत, गोरु-पन्नुक, न्यायाधीश तथा धारावह आदि हैं।

घाट -

भरतमुनि तथा रामचंद्र मृणुकंड ने घाट की आयु क्षा है। नायक के किए उपयोगी गीत नृत्य आदि विधानों में ते देखी एक विषय को अन्याय वाला घाट कहलाता है। दर्शनार्थ दिव्यन्त्र के अनुसार भोग विलास में अपनी संयमित को पुरस्कृति वाला, धूर्त, न्यायाधीश देश कारों के एक का को अन्याय वाला केवला की आयुक्त करने में 69, दातिनत मानने में घाट, गृहरामणी और गोरुपन्नुक में स्थायित्व पुरस्कृत घाट कहलाता है।

मृण्युकटिका में दो घाटों का वर्ण मिलता है उनमें से एक प्रतिनियक श्लाक का घाट है तथा दूसरा नायक वसा नक्वलेना का है।

153.  राधा १०८९-९०, तारा ३४०
154.  नारा २४-१४, तारा ४-१४ लूँ २५१
155.  दरा २-७, नारा ४-१४ लूँ २५१, धारा ४-१२७, धरा १-४०,  धरा १७, राधा १-७१
156.  तारा ३४१
शाकार का रिपट -

शाकार का रिपट बुधिमान, किस्म, सम्बन्ध, धार्मिक, साहित्य, निरेंधर तथा अन्य बुझे की पदक्षेप अनन्त बाला है। शाकार के प्रारम्भ में वह अपने द्वारका शाकार के साथ पक्षलेखन का परखर अन्तरण द्वारा दृषिकोषों पर लोटा है तथा शाकार के अन्तर्गत अन्य को विकराल ध्यान के प्रति सेवा करता है कि तुम तो बाहर मे पहुँच जाने के लिए दर्शक अनुभव का समान भूमि से कैसे करना चाहिए। वहें पर उसे साबित है कि यह एक लाखी, लड़ा, नाम की शान्ति है जिसका निवास आदि, मूर्त आदि वदी तथा सर्व गुणों के लोह तत्त्व समान भूमि से कैसे करते हैं।

यह बुधिमान है। दातादाता के पक्षलेखन का पता चलने पर उसे परमाणु अन्तरण कर देता है तथा परिमाण भूमि से दातादाता के पर की पूजा अन्तरण देता है। पक्षलेखन के अन्य भूमि में तिरोंशित होने पर उसकी माता की सुविधा तथा नुकसान के द्वारा से पता कहने के बारे में कहता है। उसे देखते हैं तथा उपलब्ध भूमि में लेनें में करते हैं। रद्दकरण जो पक्षलेखन की कल्पना शाकार के इसरा पकड़ देते हैं उनके प्रति भविष्यक देखते हैं। तथा वह दृष्टिनको पक्षलेखन से नीचे अन्तरण कहता है। वह दातादाता के गुणों का प्रशंसक है जो दीनविदों के लिए दुष्पूर्ण, तत्सम्बिक अपरिहार्य है इत्यादि गुणों की गुणतुलना के अर्थ उपविद्यनों के में एक वही सत्तान्तर चक्षु है। नारियलों को भी वह दिशा करता जानता है उन्हें जानता जैसे दाता बनने के लिए वहण करता है तथा घोड़ा भागा है।

157. मू. 1.31
158. वदी, 1.32
159. वदी, 1.33
160. ग्रंथ: काश्मीरुख्य वृहद्देश्य: पाद्यो: पताति। - मूप्रक्रम ईं.व., पृ.46
161. मू. 1.48
उसी प्रकार स्त्री हुई से या प्रेम करने पर वषा में होती है। 162 अतः प्रत्येक उपपत्ति का निर्देश अर्थतः है। शक्ति के लारा वस्त्रों को गारने के विरोध करते हैं तथा उसे लक्ष्य का देते हैं कि वह उसकी के सामने म्युडार अन्य वाली 32 निर्देशार्थ वस्त्रों को ना मार कर परतोक त्यो नदी अरे पार खेला। 163

वह गरणार्का रक्त है। वस्त्रों के गारो करने से शक्ति के यदि आ जाने पर उसे फैली नहीं होने का अधिकार देता हैं। 164 शक्ति के अर्थों से अपने पार धरातल वस्त्रों को उसके पार रख कर वह खा खाता है। 165 वे यह उसकी बड़ी भूमि थी। वह वापस आकर वस्त्रों को देखकर भूपित हो जाता है तथा ग्लेटर पाकर इस प्रकार कहता है - उदारता त्यो नदी को नहीं नहीं हो गई तथा रति अपने देख को धरी नई। औरांगों की मूड़ तक सुदर मुख राती, तौरक्त की नहीं, मेरे केसों की आश्वित, आयपेय का वाजार नहीं हो गया है। 166 शक्ति के इस यूपित कार्य को देखकर उसका ताथ छोड़ देता है, वह अपने उपर दोष लेने हेतु शक्ति के ती सुरु नुहा उत्कीर्ण देने पर उसे प्रियार्ता देता है तथा यह दोष शक्ति पर रहता है। 167 वह शक्ति के पापों वह कर तलायार त्योष किया है तथा अर्थ शापिक और पन्नन्द उदि पिन्डियों के पास

162. मुः 1.50
163. मयो, 8.23
164. पितः- न भेलवा न भेलव्योः। मुः कृष्ण अंक, पृः 296
165. पितः- येव अर्थ रूपमः। हन्ते, निर्वृत्तो रूपम्। गधारोऽयम्। मुः कृष्ण अंक, पृः 312
166. मुः 8.39
167. पितः- धियुः तैत्वयः। मुः कृष्ण अंक, पृः 322
वसंतलोका न चित्रः न कृत्स्वत्स्वतातुवित्त न गोचरः । मूः क्रत्म अः, पृः 324
168.

वसंतलोका न चित्रः । न कृत्स्वत्स्वतातुवित्त न गोचरः । मूः क्रत्म अः, पृः 324
169.

स्व-चित्रः कृत्य, सर्वा पाठकः, पृः 133
170.

मूः 5·12
171.

नृत्य 5·33
पश्चिमना इन्द्र और भाद्र से कृपित है तो विट अपने शास्त्रीय कार्य को—
गौरिनोजों को रातिवातर के लिए प्रेक्षा देना भी हुंडर दे से पूरा करता है।
उसे पता है कि पश्चिमना समय पुरुस्कारों के परिष्कार है किंतु फिर भी वह
उसे समय के उयुक्त उपदेश देना उपयुक्त है, प्रेक्षा वह लख के बारे बोध
रक्षा है कि तुम्हें प्रियतम के पर प्रेक्षा करे तो झूठ भी औप नहीं अर्ना पारह।
स्वरूप वाद कथा करती हो तो रात्रि उत्पत्ति की होगी या उत्पत्ति औप तो वे
भाग की जागृति नहीं होता। इतिहास संवर भी कृपित होकर प्रीतम जो भी
कृपित कर दो उसके पतन से पर स्वर क्रिया हो जाओ तथा प्रीतिम जो भी
स्वर कर दो। 172

इत्त प्रार वश्चिमना का विट शास्त्रीय प्रक्ष है।

चेत—

चेत या शुत्य को नादशाल्यकर तथा नादशाल्यकर ने अक्ष पात्र कहा
है। 173 विपनाथ तथा लिङ्ग भुजाग के अनुतार चेत कथानुसार तथा आहतारी
कहा गया है। 174 विपनाथ ने चेत और दास नाम देखा है। 175

युक्तमितक में चार चेतों का वर्ण हिर्या गया है— कर्मानक, उपमीलक,
आंत्यक तथा त्यासरक। इनमें से प्रथम नाथक पास्तत्त्र का, दूसरी तथा तुलिया
नायिका पश्चिमना के और सर्व प्रतिनाथक शब्द का है।

172. मू. 5.34
173. नाद. 2.14, नाद. 4.14 तूल 251.
174. पृ००० ४० पृ०१९, र०००० ५०२।
175. चेत: प्रतिव: एव। ताद. तुलिय परिविकर, पृ०६८
प्रथम घट कथानक सीधा-सादा तथा अनन्य दर है, उसे पास्त्र ने वसन्तसेना को प्रतिज्ञा उपयोगकरण कर लिया है। वहाँ गाढ़ी का विषय दिना भूत गया है, उसके लाने में विकास दिये के कारण प्रवहण-विकास की घटना घट गई है। वह बहुत ही भोला है। आर्यवर्ती के गाढ़ी पर चढ़ने से उसी देर में पड़ी होती रहती है, इससे ही वह अनुमान में लेता है कि वह वसन्तसेना के नुसरत की व्यवहार या शान्त हो गई है तथा गाढ़ी से भारी हो गई है, इसलिए वे होते हैं दश में लेते हैं। कथानक में क्षमिन्तित कट-कट कर गरी हुई है, वह अपने स्वार्थ का धन धीरे धीरे जाने पर भी उसकी तेज़ अपने में अनन्य अनुभव करता है। लेख में वह भोला, अनन्य तथा निष्क्रिय स्वायत्तता है और उसे क्षम में विकास में तर्कसृष्टि दिया है।

द्वितीय घट कुमारिल लिखता वसन्तसेना का नोकर है। वह तात फड़ी पाली क्रुद्ध उसी पर मुख भोलन निष्क्रिय दिया है। गोठे के लाने गोठा गहरा है तथा उसके गाने में साथ तो बेल्ली विशेष तुलसी तथा नारद शीतल दृष्टि करते हैं। वह फूल तथा योहा दृष्टि से भी भरा हुआ है। वसन्तसेना के अभाव की कृपा देने पास्त्र ने प्रति प्रति भरा हुआ। वसन्तसेना के अभाव के पर अपना है तथा खुदबुदुक विद्वान के आर शरारत करता हुआ केंद्रित दिया है। विद्वान के लाने आने पर वसन्त और लेना मूल्यादि पदों से पहलियाँ बाँटकर विश्वसन से प्रति अपना करता है। इत वाक कुमारिल कथानक की अपेक्षा अधिक शुरु प्रदर्शित दिया है।

तीतीय घट कपिलक है, वह भी वसन्तसेना का नेता है जो तेजातक प्रकाश

176. घट: पादरोपकृत-पाण्डितार्त नूपुराणं...परं गायो यात्रम्।
   - मुः-कः अः, पृ. 248

177. मृ. 3. 1
178. मृ. 5. 11
179. घट: सतायु दुःस्तदुःस्त संसारदीम्। इति लोकसुविज्ञ: विषयानि।
   - मुः-पृष्ठा अः, पृ. 198
को वस्तुलेना के पुष्पमोक्ष नाम कुडा हाथी से क्षय ता है। उसके इस कार्य से प्रसन्न होकर पादस्थता उस पर जाती विषमकारिता द्वारा देते हैं तथा वह दुःखाता वस्तुलेना को दे देता है। यह वस्तुलेना से पुरुष्कारत्व अभिभूत प्राप्त करता है।

पवित्त्र पेट त्यापि प्रतिनायक शाहर जा वे वे है। क्यानक के विचार में उसका महत्त्वपूर्ण त्यान है। औरम में यह शाहर के दुःखखयालों में भी सहायता रहा है, उसकी इतना थी कि वस्तुलेना शाहर की भाग्यस्तुमना को शान्त करे इसके लिए वह शाहर के पर में गिलाने वाली मशीन के मास का प्रलोभन भी वस्तुलेना को देता है। यह लघुतात्त्वीक तथा धर्म से करते वाला है। शाहर के वस्तुलेना को मारने वाले के लिए बनने पर तथा तुल्याकिक अथवा प्रतीतिहास देने पर भी दुःखखयाल नहीं आता। वह शाहर को अपने उत्तर देता है कि आप उसके शरीर के त्यान की लोक शाहर के नाहीं है। क्योंकि वह भी मान्य दौष के अर्थ पाया जा तथा विशेष अथवा आपो और कोई भी पाप कर नहीं करेगा। यथापूर्व वह त्यापिक भी है। तथापि शाहर के दुःखखयालों में सहायता नहीं करना राजनी। वस्तुलेना को पहरी हुई देखकर उसकी उत्ताता के लिए अपने आप की दोषी करता है क्योंकि गाड़ी के बदले से ही यह शाहर को गाड़ी में लाया हुई थी। वह तपस्याप्रय हैं, शाहर के तारा वस्तुलेना के अभिभूत उदार के दे देते से भी तत्पर बोलने से नहीं रुकता।

180. मू. 2. 20
181. वस्तुलेना - कर्मवृक्ष, इहे ते पारितस्किभिः। इत्यामार्थान प्रस्थतिः। - मू. द्वितीय अंक, पृ. 104
182. मू. 1. 26
183. पेटः प्रस्थति भद्रकः शरीरस्य न पारितस्किः। मू. अन्तम अंक, पृ. 304
184. मू. 8. 25
185. पेटः अविधारित प्रस्थतामार्थानयता कथा प्रक्षम पारिता। - मू. अन्तम अंक, पृ. 310
इतिहास शास्त्र उसे कहने भाषा का प्रताप की उदारी वाली मसूरी में अति देखा है।
वह साहित्य है, उसे वाणिज्यों की भोजनाओं के पता वाला है कि वक्तव्यों की बताया अर्थ के अरोप में पाव्यारत को मूल्यांकित किया गया है। तब वह निर्देश पाव्यारत को धर्म के लिए मद्दत की दिक्षा के नीचे कुछ अर पाव्यारत की हत्या के सिद्धांत का देखा है लेकिन शास्त्र उस पर सुवर्ण भाषा है ठहरी भी अरोप लगाकर उसके दास्तांग पर व्याप्तिन्द्र लगा देता है, इससे वाणिज्य स्थापक के लिए ध्यान पर भी विचार नहीं करते, ध्यानस्पष्ट उसे अपने दास होने की तीव्र देखना होता है तथा वह पाव्यारत के परम्पराओं पर निर्भर अपनी सामर्थ्य का कस्तो मानने में निक्षेप करता है। 186 राजा आर्थिक के राजा अर्थने पर उसकी दास्तांग लगाकर को देखा होता है। 187

गणित स्थापत्त तवार है दास तव तवार है नहीं। अच्छे नायक तव नायिका को अभाव का व्याप्तिन्द्र व्याप्तिन्द्र विश्वास अर अरुण। इस प्रकार यह तलया का पुजारी, तक्ष, ध्यान तथा परतक के बदले वाला हो दूरशिरोमणि होता है।

रोहनेन -

रोहनेन पाव्यारत का पुत्र है, गुप्तलिंग के करो अंक में हमारी सामने आता है। उसे वाल्लोरित भाषाओं का का कुंदर ली-लीक्ष लिखा है। वह बोले हैं-प्रौढ़ी के बालक की सुवर्ण की गाड़ी को देखकर वर्णन मन में भी वेती गाड़ी प्राप्त

---

186. घट:- हानि नृसी हानि भाव: ······स्वाच्छन्द-मैत्र्यम्। (इति पाव्योः:
पत्रिति) - मू. ग्राम संध., पृ. 406

187. पाव्यारत:- समुद्रत, अताको भवन। मू. ग्राम संध., पृ. 438
करने के लिए मांदता है तथा वह रामंजोक के दारा ही नहीं सुदृढ़ी की मांदी ते खेलना नहीं पाता है । यहाँ वह भावन है तेलग्रा अंबादार है । दीर्घता है मे बोझन मे खेलने पाता भावन वस्तुतता के आसपास मुक्त होने पर उसे माता मानने के लिए तेज्यार नहीं है । १८९ उसे अपने पिता के अलीम प्रेम है कारण वह पितुरमेल्टे से क्षमा मुक्त होकर अपने पिता पालनता के स्थान पर द्वार प्राणकच बेलक उन्हें मुक्त करने के लिए पाणिलोक से प्राधाण्य करता है । १९० इस दृष्टि मे उसकी रिपु-भक्ति दृष्टिगोष्ठी होती है । वह भावन होते ही भी क्षमा है ।

अधिकारणक -

नया स्वरूप मे अधिकारणक - न्यायाधिकार का वर्तन मिलता है । वह पौरा हृदय वाला, न्यायसंप्रदाय, विकासता का आदर करते वाला तथा सत्य का अन्वेषक है । वह पालनता की तपासता का समाधान करता है, उसे वह विश्वास दी नहीं सोता है किंवदंती वाला त्रुणाल है भावन कार्यवर्तिन कार्यवर्तिन कार्यवर्तिन का होता भी तिक करता है । १९१ वह भी है अधिकारणक द्वारा चार की हो गई अधिकारणकका धर जाता है तथा उसका रचनात्मक चुनने की तलाश है चेता है ।

वह चार के अनुमान दे हो चारनता की अपराधी नहीं मानता शरीक अने प्राप्त ने निरीक्षण मे दिखाए लाभान्वयने के गम लिया है । चार के अनुमान चारनता के रिन अधीकारी के अवमानना वस्तुतता की दया की थी,

--------------------------

188 रद्वीका: तत्त्व भवित--रद्वीका को मैत्र्यां तोक्किकोटिका देहि।
- मू ॰ द्रु ॰ ठंी, पृ ॰ २३०

189 कारक:-- रद्वीका, अलीक तथ भवित धाराध्याव्यायाम असनी तत्त्वमार्गविकृता।
- मू ॰ २३२, पृ ॰ २३३

190 रहीक्का:-- अरे गांधालारा:। आँ मारायत । मू-वा नेतायय! ।
- मू ॰ द्रु ॰ ठंी, पृ ॰ ४०६

191 मू ॰ ९ ॰ १६

192 अधिकारणक:-- त्याकृपाय सूद्ध्यर रहिते तव रचनात्मक:। मू ॰ नव ॰ ठंी,
- पृ ॰ ३४२
वे दिशारूक की गौंड से पिंजरे जाते हैं तो तभी अधिकारी मुक्त निम्ता जाने के काम जाते हैं। 193 तब न्यायाधीश ने प्रमाणों को देखा हुए न्याय अने में विलय नहीं दिया है। मनु के अनुसार यह विधान के अनुसार यह पापी पालोत को क्राह करने पर क्षति के बीत नहीं देता है पलक क्षतिरोधता सम्पूर्ण के साथ राज्य से निकटते हैं राजा पालक को लिंगोत्तर-मूढ़ा नेच देता है। 194 यहाँ पर न्यायाधीश ने पालोत के प्रति आन्तरिक लक्षात्मक अवश्य प्रकृति की है जो वि- 
मनुप्रि ने अनुसार उसे प्राणदन्त नहीं दिया लेकिन राजा पालक व उसे बुझो 
पर भारी के आदेश की सुचना प्रदत्त ने आदेश प्राप्त कर ने आदेश दिया है - यह शोधाक। वह प्रतिक क हटा दो। यहाँ यह गौंड है। 
प्रभावों को आदेश दिया जाए। 195 अधिकरणिक से प्रस्ताव से नायकाचरण का 
प्रवर्ध करिष्ण गौंड को प्राप्त हुआ है। 

शोधनक -

शोधनक न्यायालय का लेख है जिसमा मुख्य अर्थ न्यायालय की सफाई 
करना, आरंभ लगाना तथा न्यायालय का राजा और सर्वाधिकार के बीच सुना 
पहुँचाना या लाना है। उह न्यायालय का मार्गदर्शक भी है। अधिकरणिक के 
न्यायालय का गायत्री कपोल पर वह करता है - वह न्याय भवन है आ: न्यायधिकरण 
प्रेम वस। 196 यह शोधनक आगजन के चपरासी | Poon | का प्रवर्ध है।

193 अधिकृतां: सरिषोकुमः विक्षम | पृ-नवम अफ़, पृ-372
194 मृ-अप 39
195 अधिकरणिक: शोधनक अवलार्यार्य कपोल: पृ-दीयातामथोऽधिकृतां:।
  - मृ-नवम अफ़, पृ-380
196 शोधनक: अवधिकरणांकम:; तलुप प्राक्तवधिकरण शोकाम:।
  - मृ- नवम अफ़, पृ-340
श्रेष्ठी -

श्रेष्ठी नगर आ एक प्रतिष्ठित तैत्ति है। यह एक दिनांक में आधिकारिक
ही क्षेत्र में कार्य तथा की गई ग्लोब में।

मुख्यतम के नवम अंक में इसका पर्यावरण प्रश्न पूछता है।

कायम्य -

न्यायालय में लेख का आर्थ अलग अलग या व्यक्तित्व लेख लेखक न्यायम्
कलात्मक है।

मुख्यतम के नवम अंक में श्रेष्ठी ने न्यायाधिकार को आवश्यक तैत्ति है कि
पूर्ववर्तमान नामक दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर
हैं, ऐसे नहीं। यह लिखने के लिए अधिकारिक तैत्ति ने श्रेष्ठी कायम्य को आदेश दिया
है। कायम्य ने आवेदनमूलक - आर्थ अलिप विचार 197।

परम-पनन्दक -

परम तथा पानक दोनों ही नगरस्थ है। राष्ट्र पालक की बैठक
ते भाग्य हुए आर्थिक तथा आर्थिक भाग्य भी रोकता निर्लक्षण करते है।
वे पालन तथा गाड़ी को भी रोकता है। उत्तर गाड़ी
में पालन के साथ होने का पेट से पालन पालन पर पाने विना निर्लक्षण
रखे हुए ही जाने देना पालन है क्यौंकि उसके अनुसार पालन के पालन

197. कायम्य:- यदार्थ आवास्ता निधा कृत्याः आर्थ विचार ।
-भू. नवम अंक, ग्रंथ 346।
दोनों ही उद्धतियाँ में पूज्य स्वरुप अधिकारभूत हैं। लेकिन पिता ने अपने पिता की भी नहीं जानता है क्योंकि वह वास्तव में प्राप्त नहीं होता है। 199 पद्धति में वे हैं जिनको वे अपने पिता को देख कर अभ्यास करता है। लेकिन उसके रहस्य प्रयोग में कमी न होने से आर्थिक अथवा सामाजिक में तत्कालीन देश के प्रयोग होने पर व्यवस्था की जाता है क्योंकि वह स्वभावित है। इसी तरह वह व्यापार का स्वयं विदेश अन्य पालता है। इत्यादि यह दोनों में लोगों के बीच होता है तथा वे अपने माता-पिता की भावना से व्यक्ति स्वयं अपना छोड़ देते हैं। पद्धति में वे पीटे बाने पर पोर्ड का व्यापार में नहीं रहने देते। अर्थात् वे अपनी देश के पास नहीं रहते। अर्थात् वे अर्थशास्त्र का तत्कालीन देश है, और राज्यविकास को तत्कालीन व्यवस्था के पास नहीं रहते। अर्थात् वे अपने अशोकीय व्यवस्था से व्यक्ति का भाव बाने हैं।

इस प्रकार पिता तथा पद्धति में तत्कालीन देश का अवधारण अधिक अध्यात्मक को अपने बाह्य दिशा देते हैं और राज्यविकास में उसके तत्कालीन बनने के ही आर्थिक कार्य करते हैं राज्य को अपने अमोहित व्यवस्था होते हैं। उसे प्रकृतिकृत रूप में भी कोई बाने नहीं देते। पूरा है।

दूरूढ़िक

दूरूढ़िक पूरे समय में व्यापार की रचना करता है। यदिपि वह ज्ञानी है लेकिन पिता नहीं है, वह दक्षिण के लिए एक क्षेत्रिय

198. मू. 5.14
199. मू. 6.15
200. पालनस्थल: - पद्धति: पूर्वयुद्धकाल का मध्य ।
   - मू. 538
पुस्तक को सताने के पश्चात् में नहीं है। 201 यह माधुर को पीटता है। माधुर के द्वारा ध्यान की देने पर उसकी औरों में धूल बोक देता है तथा सेवाक को मानने का सौहार्द करता है। 202 यह पुस्तक को पीटता अपने रिम्त शरिक व्यक्त के पात्थर पता गया है। 203 द्वृर्क द्वारा पश्चात् हुआ सेवाक की बोध रिखूँ बना हुआ नायिका वल-वलना की रक्षा करता है।

माधुर -

माधुर तप्त है तथा प्रभान पुत्रक भी। 204 हां, जब तारा जुआ बढ़ते हुए सेवाक इत्तर पुरुष का बाध्य हो जाता है तथा यह द्वृर्क से मार खाता है। वह वस्तुतः तथा ते सेवाक को सुधारति हेतु रिप्ज़ कैन को प्राप्त कर उसे सुधारति कर देता है।

पुत्रक - हुआरी -

माधुर के तारा यह और पात्र हुआरी भी सेवाक का पीटता करता है तथा उसे पातालङ्गक में भी दूर निकालने का प्रयत्न करता है। तोको की संख्या पौछत बायो नहीं है। 205 इनंदु के तारा पृथ्वी के आर तथा तात नीति कौम्पत रिप्ज़ करते हैं। पृथ्वी के नीति रिक्षों लोकों को समान मत: माता भी बाद गया है इनको अंक पद्मा जाता था, यहां चिप्पे पाती को धार लेना सम्भव तथा तरल नहीं था, परन्तु दौर पुस्तक यहां भी पहुंच जाते थे। 204 हुआरी का सेवाक

---------------------------
201 पृ० 2.13
202 दूर्दर्श भादुरस्त...कीर्ति दरात्तिः। - मृ. हिन्दी अंक, पृ० 86
203 माधुर - उरे भाण्ड़त्री क्रृष्णस्त्रय...भूषणम् गण्डः । - मृ. हिन्दी अंक, पृ० 95
204 कृष्ण हुआर, तसक्ता नाटकों का भागोतिक परिचय, पृ० 4
को पाताल में खोजना बहुत और दीनता होता है। यह माता की ओर से केम्पिंग पायें हुए माधुर के साथ सतन्त्र होकर खाता गया है।

बन्धुत -

बन्धुत पक्षत्वाता के आधार में रहते हुए आपना व्यक्ति करने पाता गर्वखा पुनः है। विवेक के द्वारा हुए जाने पर वह अपना परिश्य क्षत्र पुकार देता है - हम लोग पराये घर में पारित हुए दूसरों का आदम भाग बड़े हुए, पर पूर्वों के द्वारा परिश्यों में उत्साहन्त हुए, पराये घर का उपस्थान करने वाले, विवेक गुणों से दूर बन्धुत लोग हैं जो कि दानियों के अभ्यस्त से अभ्यस्त ठीक खिद्दर करते हैं। 205

पाण्डात -

इसमें आपके नये पात्र पाण्डात वांछा दिखे गए हैं, उनमें से एक का नाम आदर्शत तथा दूसरे का गोष्ट है। वे दोनों ही प्राणियों के में हैं नये तत्पर व्यक्ति हैं। वे पाण्डात की उदारता तथा तन्त्रता आदि गुणों से प्रभावित हैं। यथार्थ पाण्डात अपराधी हैं केवल उनके पिता आदि के तन्त्रिक वचन पर गोष्ट को आदर्शत बना करता है - इसके समयर्थ ही अदि अंग तुष्क कर है और इसे मात्रक लड़ाने के क्षेत्र प्रयोग कर देता है। ऐसा नहीं है क्या राह द्वारा श्रंख्य विद्युक्त भी अन्य देशाँ में किये यथार्थ नहीं मिलता। 206 बालक-रोहित के उन्हें पाण्डात नाम उसे पुजारे पर एक करता है कि उनका अन्य यथार्थ पाण्डात खूब।
मे हुआ है, लेकिन वे पाण्डात्त नहीं हैं, पाण्डात्त तो तन्कों को अपराधित
करने वाले तथा पापी होते हैं। उन्हें राजा का पासदत्त को मारने
के लिए बाधित कर रही है। वे पाण्डात्त होते हुए भी सम्भवदर हैं तथा
अन्त में वे आर्यक के राजा अन्ने पर पाण्डात्त हुए के त्यागो अभा दिये गए
है।

स्तनी पात्र -

स्तनी पात्रों में नटी, धूला, मदोनका बाँट का वर्ण मिलता है।

नटी -

नाम्नी के बाद नटी का आर्य प्रस्तापकात्र नहीं ही सीमित रहता है।
सुख्दात्त के उन्नत अपनी पत्नी नटी को पुकारता है। सुख्दात्त वह में किसी
आयोजन को देखने नटी के पुकार हैं। कि दल आयोजन का त्याग तथा आर्य हैं तो
वह उसे प्राप्त करने हेतु आयोजित है। वह अभिप्रयोगत्त प्राप्त रहने पर उनके कर्म में उसे ही पति
अपने ग्राम देने हेतु आयोजित है। उसे ही पति
अपने ग्राम देने हेतु आयोजित है। उसे ही पति
अपने ग्राम देने हेतु आयोजित है। उसे ही पति
अपने ग्राम देने हेतु आयोजित है।

207. मू. 10.22
208. पाण्डात्त: - आर्य पासदत्त, त्यामिनोकोपपाध्यपाठ ।
      - मू. दक्ष आंक, पृ.416
209. पासदत्त: - ने पाण्डात्त: सर्वपाण्डात्तानायोध्यतो वञ्चन ।
     - मू. दक्ष आंक, पृ.433
210. नटी - तपीष कर्मान्तरे भावशीली । - मू. प्रथम आंक, पृ.10
धूता -

मुख्योपदेश के स्त्री पानी में पासदत्त की परिवीता तथा धूता का प्रमुख त्यान है। वह एक पतिता थी है जो घर के घर दुःख में बाहर की मायाओं है। पहो जो देश के गारण अर्जित न्याय के पहो लोगे होने से वह पूरीति ने जाती है तथा परित के तपमान की सदार अर्जित न्याय के अन्त मातृभूमि से प्राप्त हुए सागर तारामंडल पिपुल को लंप देती है। पासदत्त के सुनों से परीक्रिया तथा धूता की ही नदी जी हुई पलकेनारा रत्नाकरी पापिता हूना के पत्ता बनाती है तो वह आर्य्पुत्र जो ही अपना आर्य्पुत्र मानती हुई उसे लेना उपचार नहीं मानती।

धूता अवतरण उदार है। उस परित की प्रेमिका पलकेना से इष्टा नहीं करती तथा न ही बुद्धित होती है। अपने परित के वह अलौकिक प्रेम करती है, उनके वक्त का समाप्ति सुन कर वह पिता में कुटुंब प्राप्त त्याग करना पाता है। उसके लिए पपापरण उपर्युक्त है लेकिन आर्य्पुत्र का अष्टगत नुना अभेद नहीं है। आर्य्पुत्र पासदत्त के लाल हो सुनकर पुत्रम होती है, पलकेना को बीति मानती है तथा उसकी कुंकम पुकारती है।

211.धूता - आर्य्पुत्र गृहार्थ ग्रामदीर्घा प्रतादोभवात्...अर्य पुत्र तथा ममावरणविशेषः।
- मु· दक्षिण दृष्ट, पृ·236

212.धूता - पर पपापरणमु। न पुनर्याप्पपात्रमु। संगमाकार्मम्।
- मु· दक्ष औं, पृ·434

213.धूता - पलकेनारा पुत्रमेति दिष्ठार्यु पुलालनी म०। मु·दक्ष औं, पृ·436

214.पलकेना - अर्घ्यु पुलालनी संवृत्त। कथा। स्निय्यायो न्यायार्थिगः।
- मु· दक्ष औं, पृ·436
रत्नाकरदेवी दोषित के अनुसार धूता एक आदर्श हिन्दू पत्नी है बला
के महात्मयों तथा मनुसूति में कहा गया है। उत्तर क्रमश: उद्देश्य अपने पिता
की प्रति रक्षा, त्यज्य तथा मंगल को सुरक्षित रखना है। उसमें भी अपने पिता
के ही आदर्श हैं तथा उसे एक तप्ती तत्त्वार्थायापूर्णी दिखाया गया है।
एक और समीक्षा हो: कृष्ण राजा के धूता के विषय में लिखा है कि वह किसी
जैसे देश से मुक्त था, स्वार्थक्षी थी। वह नायिका वत्सलैना का सुर्ख रात्रि
घर के दरार दुरारे पर अपना वह अपने अपने उसे खेल देते हैं तथा अपने पिता
की नयी देखभाल का स्थायी बनती है। तथ्य पुत्र एक भारतीय पतिभक्ती
नारी है।

मदनक्षा

वत्सलैना की दिखायी तथा रघु की मदनक्षा वपूर्ण सेवापूर्णता ते
दाती है लेकिन वहु तथा पत्तुल वाणी बोलने में निरुच है। वह वत्सलैना के प्रति
अवलोकन सेवा रखती है तथा रघु की पत्थर अन्दर में भी निरुच है। जब वत्सलैना
अपनी माता के कहने पर भी स्वतंत्र अन्दर रघु के देश देवसूत के विचार हो जाती है तो
मदनक्षा उसे जिसी गुणक के रघु में होने सम्बन्धी है, दूरदर 217 के दृष्टि की धात जान
लेने में मदनक्षा जुलता है। वह रघु रघु प्रेती तथा दिखायी सदृशति है।
शैवाली के प्रभाव के घर में स्थान बनाने के उद्देश्य के बारे में उसने कहा है कि अपने अपने बाहरी तथा
पूर्व कोनों ही सीधे में काल पदिये हैं अब ही उसने वह कार्य उसके दाती भाव के
मुक्त कराने के लिए किया था।

215. रत्नाकरदेवी दोषित, वोरैन का रघुमूला द्वारापु, पृ. 61।
216. ती० धूत राजा, रघु अक्ष हेमकूट, पृ. 168।
217. वत्सलैना, रघु तप्या ग्रामू। वरद्भूधावन परम्भता मदनक्षा अत्य तुम्ह।
- मृ. वित्तीय वपू, पृ. 68।
मदोनका वृक्षतापूर्वक श्रीपतिक हो वह आन्तिक पास्तत्त का सम्बन्धी नवकर वस्तुसंयोग को देने के लिए प्रेरित करती है । 218 वस्तुसंयोग उसे इत जर्ज से दांतर्य संज्ञन से मुक्त कर सेना भारती है । जब वस्तुसंयोग उसे श्रीपतिक हो सान्योग हो तो वह खुश नवकर उसके परमें गिर पड़ती है । मदोनका भी रुक नहीं है । श्रीपतिक अपने मेत आयध को खुट्ठ भारत है तो वह उनका प्रतिरोध नहीं करती है स्वयंक हवा वह दांत न होकर एक तन्दृशादि का गई थी, जिस का उसने उपत्र नियाल रखा है ।

रदोनका-

रदोनका पास्तत्त का पेटी है, वह पास्तत्त के दांतर्यमूर्ण जीवन में भी उसकी सेवा खरी निर्णय से करती है तथा आशागारीकरण है । पास्तत्त के पुनः रोहतन की भी देखना करती है । पास्तत्त के दोहर होने का उसे दुख है, रोहतन का संवर्धक की ही गाड़ी देने का हठ बनने पर दुखी हुई करती है - पुनः नो यहाँ धरा तत्त्व का व्यवहार नहीं है । फिरता की के पुनः सम्पत्तिकारी टोपी पर तोने की गाड़ी से शेषका । 219 दस्त अंक में वह पास्तत्त को धीरीगत देख कर उनके घरों पर गिर पड़ती है । उसके सेवा भारत से पास्तत्त भी प्रकट है ।

पेटी-

मुख्यभूमि के द्वितीय अंक में पेटी का वर्णन मिलता है वह वस्तुसंयोग की

218 मदोनका - तालेबार्यमूर्ण सम्बन्धी....... अघायता उपयोग मु. घुष्मांड, पृ. 160
219 मदोनका - जात, खुट्ठा-स्वाख....... तुन्नाकारिया कार्यक्षमता ।
- मु. घुष्मांड, पृ. 235
चीता ने बोला कि कल्याण को उसकी माता की ओर से लाने अथवा पूजन करने तथा पूजन-निष्टाने के लिए कहती है।

रामायणी -

रामायणी कल्याण की देवी है। वह दूरदर्शन में कल्याण के लाभ पास्तर के घर गई थी जब वे उसे कल्याण के आदेशानुसार पिता के लाने वापित भेंट दिया गया है।

पुण्य पाता -

पुण्य पाता हृदय रोशन है। पुण्या पुण्यात्माका कल्याण की माता है। पास्तर को देखकर वह अपनी बेटी के दिक्क गुण को ठीक पुक्का पर समर्पित करने के प्रसन्न होती है। अंग्रेजी माते प्रसन्न पर वह पास्तर की प्रसन्नता करती है, वह पास्तर को कल्याण का हत्यारा नहीं मानती है तथा स्वामिनाथी ने उसे घोड़े के लिए प्रार्थना करती है। लेकिन अपना प्रयोजन तिथि न होने पर रोती है। उसे निकाल न जाती है। वह पर उसकी उदारता दिखाई देती है।

220. पेटी: आयें, मातादेशकत-स्माता मूलचादेशतादा पूजन नियति।
   - मूल-जीताम अंक, पृ. 66
221. कल्याणा: [विन्दु प्रति] भाव स्पष्टा कल्याणा मार्गस्वरूप भनता।
   - मूल-पैंत्य अंक, पृ. 218
222. पूजा: अर्थ हो, पास्तर। सुनितिहरु अनुक्रिया योगनम।
   - मूल-रक्षा अंक, पृ. 356
उपेक्षित पात्र —

मुख्यकोट्टक में कुछ से पात्र भी हैं जिनका उल्लेख निया गया है लेकिन वे रंगरें पर उपेक्षा नहीं दे सकते। उनमें से कुछ से वास्तव में पत्ता नहीं है जो पास्तर बोल देते हैं जो कि बाहारी के हाथों जाती हैं और उनका उल्लेख नहीं है। पालक स्वर है जो बाहरी लोगों को बाहरी लोगों को कसा करने वाला है। वह वास्तव में पास्तर का पत्ता देता है। रेसिल पास्तर का पत्ता है। वह उल्लेखित का एक यातायात है तथा अभावित स्थान का भाग है जिसका उल्लेख नहीं है।

यपि पे पात्र रंगरें पर नहीं आए हैं लेकिन प्रकार के निर्देश में इन्होंने अपना भूषण योग्यता पद्धति तथा अथािनक के निर्देश गति पद्धति की है।

इस पर्याय हम देखते हैं कि मुख्यकोट्टक में पात्रों को संबंध अधिक दिखाई देती है लेकिन इन पात्रों का वर्ण यथास्थान पर समृद्ध होती है।

== == == ==